

अक्षर प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य

1. जय हिन्द - जय सनातन - जय विश्व

- 1.1 सनातन शब्द की उत्पत्ति
- 1.2 जो तथ्य था, है और रहेगा उसे सनातन कहते हैं-
- ...दो...
- 1.19 अक्षर प्रभात की वृन्दावन योजना
- 1.20 विज्ञान आधारित भारतीय सनातन संस्कृति

2. अवकाश काल अधिशाप नहीं वरदान

3. बुढ़ापे का सौन्दर्य कार्यशील रहना

4. सुख शांति मिल सकती है ?

5. समाज के प्रति जवाबदारी क्या है ?

6. राष्ट्र के प्रति आपका योगदान क्या हो ?

7. राष्ट्रीयता के संबंध में विदेशी विचारकों के विचार

8. गोवंश हिताय

9. भारतीय जीवन दर्शन

10. जीवन दर्शन

11. भारतीय पक्ष

12. भागवत ज्ञान गीत

13. अद्भुत भागवत कथा सार

14. गोवंश हिताय च

15. शाश्वत जीवन मूल्य-मनुस्मृति

16. देश का नाम भारत क्यों ?

17. शाकाहारी आहार का महत्व

18. आध्यात्मिक सहकारिता का महत्व

19. यम-नियम का आध्यात्मिक जगत में महत्व।

20. अमरीका और भारत में अंतर

21. सभी पैगाबरों के आदर्शों को जीवन में उतारे

22. जल एवं पर्यावरण संरक्षण

23. जीवन में हरिये न हिम्मत

24. हम भी पशु हैं क्या?

25. शौर्य एवं शिक्षा

26. गुलामी की सेज

27. भारतीय खुदरा बाजार पर हमला

28. महान् ख्वतंत्र सेनानी राजा वेंकटप्पा नायक - भास्कर राव मुड्बुल (अधिवक्ता)

29. अक्षर प्रभात डिशू-शिक्षा उत्थान विभाग - भाग-1

30. शीराम जी-अयोध्या

31. तृतीय पुण्य तिथि पर शृङ्खांजली - डॉ. प्रभा बंसल

32. द्वशमी पुण्य तिथि पर शृङ्खांजली - डॉ. प्रभा बंसल

33. राष्ट्रप्रेर्मी विचारों की झालक

34. अक्षर प्रभात जल एवं पर्यावरण सैनिक क्यों बनें?

35. अक्षर प्रभात की उत्पत्ति

36. जीवन का अर्थाधार-गोवंश

37. जीवन सार शृङ्खला :

37.1 जीवन सार - 1, 37.2 जीवन सार-2

37.3 जीवन सार - 3, 37.4 जीवन सार-4

38. गाय सिंग मरिगी?

39. पर्यावरण बचाओं प्रयास/समाधान

40. वसुष्ठीव कुटुम्बकम का मूल मंत्र भारतीय परिवार

41. आपकी रसोई एक डॉक्टर का कार्य करती है।

उसको पहचानों-जानों-भारतीयता अपनाओं

42. संयुक्त परिवार अनिवार्यता जरूरी

खण्ड-1
खण्ड-2

खण्ड-19
खण्ड-20

- स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती
- डॉ. एम रामा जोईस
(भूतपूर्व व्यायाधीस एवं राज्यपाल)

(प्रकाशन में)
(प्रकाशन में)
(प्रकाशन में)

(प्रकाशन में)
(प्रकाशन में)
(प्रकाशन में)

(प्रकाशन में)
(प्रकाशन में)
(प्रकाशन में)

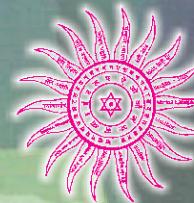
(प्रकाशन में)
(प्रकाशन में)

(प्रकाशन में)
(प्रकाशन में)

खण्ड-2

राम गोपाल

जीवन यात्रा



2nd अप्रैल 1947

से

2nd अप्रैल 2022

खूबसूरत रिश्ता है मेरा, और भगवान के बीच में,
ज्यादा मैं मांगता नहीं, और वो कम देता नहीं ॥



अक्षर प्रभात प्रकाशन

(अक्षर प्रभात ट्रस्ट का उपक्रम)

22-ए इन्द्रपुरी, भौपाल



OATH

All my energy all my mind, all my thoughts, all my deeds are to be guided in to the path of collective elevation of human society without neglecting other living and inanimate objects right from this moment until the last moment of my living on this earth.

Do you all understand - yes Baba
Can I depend on you - Yes Baba

Ram Gopal
02.04.2001

शपथ

मैं शपथ लेता हूँ कि प्रत्येक क्षण में इस पृथ्वी पर मेरे जीवन के अंतिम क्षण तक किसी भी जड़ व चेतन सत्ता की अपेक्षा किये बिना मानव समाज के सामूहिक उत्थान के लिये अपनी समर्पण शक्ति, कर्म, चिन्तन एवं मानसिक शक्ति लगा दूँगा।

क्या तुम समझ गयेहाँ बाबा
क्या मैं तुम पर निर्भर हो सकता हूँ - हाँ बाबा

राम गोपाल
02.04.2001

हमेशा धर्म और सत्य के साथ खड़े रहें,
भले ही आपकों अकेले ही रहना पड़े।

प्रभू आपके चरणों में

प्रेम पुजारी दास बनूँ मैं, प्रभू आपके चरणों की
चरण कमल के रक्त रजो में
करु अर्पण मैं प्राणों की।

जन्म-जन्म की कुण्ठाओं में भटक रहा हूँ तेरे उपवन में
मोहिनी माया तेरे विद्यान की
गैर न देती विचलन में

मन के भाव सुकोमल प्रियवर,
व्यक्त करुँ तुझसे मैं कैसे।
अंधाकार धनीभूत अन्तस की,
तेरे पास आउँ मैं कैसे?

उलझ-उलझ कर सुलझ न पाऊँ
विपद यही है व्याकुल मन की
अर्ज करुणा के कातर स्वर में
सुनो पुकार मेरे आकुल मन की
व्यथित हृदय में आस लिये
तेरी कृपा का पात्र बनूँ मैं।
कब से तड़प रहा प्रियवर
तेरे करुणा का पात्र बनूँ

शवियता अचार्य गुणिन्द्रानं अवधात्



राम गोपाल जीवन यात्रा

राम गोपाल जीवन यात्रा

2nd अप्रैल 1947

से

2nd अप्रैल 2022



सत्यओऽम् सत्यनाम् सत्याम्, सत्यपुरुष, सत्य वदगुरुवै नमः।

राम गोपाल

(नव्यमानवतावादी एवं पर्यावरण प्रेमी)

अक्षर प्रभात प्रकाशन

22-ए इन्डपुरी, भोपाल

फोन : 0755-4256900 मो. 9425013154, 9399515697

E-mail : aksharprabhat@hotmail.com, Website : aksharprabhat.org/com
:advipra- deep TALK Channel App- aksharhelp

जीवन को वर्तमान में जिये

- अक्षर प्रभात

राम गोपाल जीवन यात्रा

समर्पण



1

तव द्रव्यं जगत्गुरो
तुश्यमेव समर्पये ।

परम पूज्य- मार्गदर्शक बाबा के
श्री श्री चरणों में
सादर समर्पित

आदर्श हेतु संग्राम करों, आदर्श में मिल जाओं।
आदर्श के लिये जिअों, आदर्श हेतु भिट जाओं।

-बाबा

प्रकाशक द्वारा सर्वस्वत्व संरक्षित

प्रथम संस्करण	:	1000 प्रतियाँ दिनांक 2 अप्रैल 2022
प्रकाशक	:	अक्षर प्रभात प्रकाशन 22 ए, इन्द्रपुरी भोपाल-462022
मुद्रक	:	गोपी ग्राफिक्स भोपाल
सम्पर्क सूत्र	:	रामगोपाल बंसल 9399515697
सहयोग	:	आपके आशीर्वाद के लिये प्रार्थना

आने वाला कल कभी नहीं आता, वो जब भी आता है तो आज बनकर ही आता है। इसलिये आने वाले कल में जो भी अच्छा करने की चाह हो उसकी शुरुआत आज से ही करना चाहिये संतुष्ट जीवन सफल जीवन से सदैव होता है। क्योंकि सफलता सदैव दूसरों के द्वारा आंकलित होती है। जबकि संतुष्टि, स्वयं के मन और मरित्यक द्वारा मिलती है।

एक खुबसूरत मुरुकान के साथ.....

नैतिकवादी बनो-अनैतिक नहीं।

- अक्षर प्रभात

सनातन-मानवधर्म-भागवत धर्म

सनातन जो प्राकृतिक धर्म है।

- स** सुन्दर स्वस्थ शरीर, नियमित योग द्वारा भौतिकवाद
- ना** नाम जाप अपने—अपने ईष्ट का, नियमित साधना द्वारा मानसिकता
- त** तन—मन को समझों विश्व अपना घर 'वसुधैव कुटुम्बकम्'
सम्पूर्ण विश्व को समझो एक परिवार आद्यात्मिकता
- न** नाश करो असुर शक्तियों का (अपने अंदर आये असुर विचारों एवं समाज में आई असुर मानसिकता, संघर्ष करने के लिये तत्पर रहों) राष्ट्रीयता

उठे, अन्याय के विरुद्ध तब तक संघर्ष करों, जब तक कि वह समाप्त न हो जाये। (अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना ही धर्म है। — गीता)

राम गोपाल
अक्षर प्रभात— 2002

धर्म ऐव हतो हन्ति, धर्मो रक्षाति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यों मा धर्मो हतोऽवधीत्॥
(धर्म उनकी रक्षा करता है जो उसकी रक्षा करते हैं। जो धर्म को नष्ट करते हैं वे स्वयं नष्ट हो जाते हैं। अतः हमें धर्म को नष्ट नहीं करना चाहिये जिसके परिणामस्वरूप हम भी नष्ट होने से बच सकें।)

“न जाति, भाषा, मतवाद हो, न भेद, ब्रुद्धि-व्यवहार।
विश्व पिता और सुष्टि से, साधक करते प्यार ॥

-बाबा

धर्म का आधार

- धर्म – जिसे हम धारण करते हैं जो जीव की खुशहाली का आधार है।
- धर्म – सत्य, सेवा, त्याग, प्रेम, श्रद्धा में जो आचरण, अनुष्ठान—अनुभूति से हो।
- धर्म – वास्तव में मनुष्य जीवन के सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया है और वह मतवाद, रेलिजन या सम्प्रदाय नहीं जिसे हम यह मान बैठे हैं। हमें बहकाया एवं झुटलाया गया है।

धर्म संगठित करता है। रेलिजन विखण्डित करता है (धर्म मानव—मानव को जोड़ता है। रेलिजन मानव—मानव से दूरी पैदा करता है।) प्रत्येक जीव का अपना धर्म है।

सेवा सेवा ही परम धर्म – (सेवा—मेवा पाने के लिये नहीं) संगठन बनाओं फूट मत डालों, सेवा करो— शोषण मत करों, संतोष करो— संग्रह मत करो, सत्संग करों— संताप मत करो।

सत्य जगत् (विश्व) में सत्य ही ईश्वर है। धर्म की स्थिति सत्य के आधार पर टिकी रहती है।

त्याग त्याग समाज को अमूल्य सम्पत्ति बनती है। त्याग से बलिदान तथा बलिदान से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

प्रेम प्रेम ही भक्ति है प्रेम ही ईश्वर हैं प्रेम मानव को उर्ध्वगामी बनाता है प्रेम बिना संसार संभव नहीं।

श्रद्धा विश्वास—आस्था पर ही जीवन टिका हुआ है। श्रद्धा—बिना जीवन शून्य।

रामगोपाल— अक्षर प्रभात 2002

मानवता का पतन ही धर्म की हानि है, मानव जीवन का लक्ष्य एक ही है परमात्मा की प्राप्ति।

विश्व ब्रह्माण्ड के सभी मानव का, सबसे बड़ा कर्म यही।
शुभ दिन को निकटतम लाना, श्रेय साधक का धर्म सही। -बाबा

दो शब्द

विराट कार्य करने के लिये अपने को छिपाकर रखना पड़ता ही है। पर हित के लिये झूठ बोलना अच्छे कार्य को सिद्ध करने के लिये जिसमें आपका कोई स्वार्थ नहीं है।

यदि कोई हमारा सही—सही परिचय बता दे तो जन साधारण हमारे पास भीड़ लगा देगी तथा जो कार्य हम कर रहे हैं। उसमें बाधा आने लगेगी क्योंकि हमें अभी विराट कार्य करना है।

3

हम देख रहे हैं कि वर्तमान में संसारिक लोग फालतू गप्पे मारकर, तास खेलकर, शाराब की टेबल पर बैठकर, फालतू फिल्में देखकर, फालतू टी वी सीरियल देखकर, एक दूसरे की गलतियों पर ध्यान देकर—बताकर समय नष्ट कर रहे इससे हटकर हम अपने कार्य (बाबा के बताये) में लिप्त रहते हुये वर्ष 2000 से लगातार कार्य कर रहे हैं। वेसे हमने जब से होश संभाला वर्ष 1969 से अब तक प्रतिवर्ष डायरियों में अच्छे—अच्छे सत् वाक्य जब भी हमें पत्रिकाओं में, पुस्तकों में, सामाचार पत्रों आदि में मिलते थे उनकों हम डायरी में लिखते रहे हैं। आज भी हमारे पास 1969 से 2022 तक की डयरीज है। मैं अपनी दिनचर्या बाबा की बरामय मुद्रा वाली फोटो देखकर एवं संत सम्राट् जी के दर्शन उपरांत साधना करके ही अपना कार्य प्रारंभ करता हूँ यदि किसी दिन किसी कारण वश दर्शन न होने पर मैं बेचैन रहता हूँ परंतु बाबा का आर्शीवाद हमेशा महसूस रहता है और समय समय पर स्पन्दन द्वारा महसूस होता रहता है।

मेरी अंतिम इच्छा “मैं बगैर किसी बिघ्न बाधाओं के “बाबा” का कार्य करते— करते शून्य में विलीन हो जाऊं।

निरंतर.....

आदर्श हेतु संग्राम करो, आदर्श में मिल जाओ।
आदर्श के लिये जीओ, आदर्श हेतु मिट जाओ॥

—“बाबा”



राम गोपाल जीवन यात्रा

“बाबा” ने सही ही कहा – “करते – करते मरो, मरते मरते करो”
इसको हमने जिन्दगी में डालने की कोशिश की बाकी सब “बाबा” के ऊपर।

जीवन में संजाये हुये :-

“इस संसार से मैं बस एक बार ही तो गुजरूगाँ, इसलिये किसी मनुष्य का जो भी भला कर सकूँ कर दूँ जो भी करुणा बरत सकूँ बरत दूँ इसे नजर अन्दाज न करूँ, क्योंकि मैं इस राह से फिर नहीं गुजरूगाँ”।

ऐसी घडियाँ आती हैं जब स्वयं परमात्मा मनुष्यों के बीच विचरण करते हैं। और हमारी सत्ता के समुद्र पर सर्वत्र परम प्रभु का स्वास-प्रश्वास फैल जाता है। दूसरी ऐसी घडियाँ आती हैं। जब वह वापस लौट जाते हैं। और मनुष्य अपने ही अंहकार की शक्ति या अशक्ति से काम करने के लिये छोड़ दिये जाते हैं। पहला ऐसा समय होता है जब थोड़ा सा प्रयत्न भी महान परिणाम उत्पन्न करता है। और भाग्य को पलट देता है। दूसरा ऐसा काल होता है जब थोड़ा सा परिणाम उत्पन्न करने के लिये बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है। यह सच है कि दूसरा पहले के लिये तैयारी कर सकता है। यह स्वर्ग की ओर जानेवाला थोड़ा सा यज्ञ का धुंआ हो सकता है। जो भाग्यवत अनुग्रह की वर्षा को नीचे बुला लाता है।

इसीलिये हम अपना शेषपूर्ण जीवन परमपुरुष के कार्य में लिप्त हैं और रहेंगे ही।

—राम गोपाल

दिनांक : 02.04.2022

(नव्यमानवतावादी एवं पर्यावरण प्रेमी)

पृथ्वी ने कहा है असत्य से बढ़कर दूसरा अधर्म नहीं है। सब कुछ सह सकती है, झूठे का भार नहीं सह सकती।

भाग्यवत-8 / 20 / 4

न जाति भाषा मतवाद हो, न भेद बुद्धि व्यवहार।
विश्व पिता और सृष्टि से, साधक करते प्यार॥ -“बाबा”



आशीर्वाद

सभी इन्सान है मगर फर्क सिर्फ इतना है,
कुछ जख्म देते हैं कुछ जख्म भरते हैं।
हम सफर सभी है मगर फर्क सिर्फ इतना है,
कुछ साथ चलते हैं कुछ छोड़े जाते हैं
प्यार सभी करते हैं मगर फर्क सिर्फ इतना है,
कुछ जान देते हैं कुछ जान लेते हैं,
दोस्ती सभी करते मगर फर्क सिर्फ इतना है।
कुछ दोस्ती निभाते हैं कुछ आज भाते हैं।

4

जीवन एक यात्रा है और इस यात्रा में मनुष्य को प्रतिदिन कुछ न कुछ सीखने, प्राप्त करने एवं छोड़ने का होता हैं और मानव आदिकाल से कलयुग की 21वीं शताब्दी तक आराम से धूमता हुआ नहीं आया है। बड़ी मेहनत, तप, त्याग और कष्ट सहते हुए आज तथा कथित आधुनिक प्रगतिशील युग पहुँचा है। न जाने कितने कष्ट, प्रेम, युद्ध और मिलन कुछ बिछुड़न सहते हुए विश्व को वसुदैवकुटुम्ब के रूप में परिणित किया है।

हमारे दायित्व तब और भी बढ़ जाते हैं जब हम स्वयं को बुद्धि एवं विवेकशील समझते ही नहीं सभी के सामने दर्शाते हुए सिद्ध करते।

निश्चय ही इस यात्रा में प्रकृति ने मानव का अवर्णनीय सहयोग दिया हैं हमें उसे धन्यवाद ही नहीं उसका शुक्रगुजार होना चाहिए।

संसार लेने-देने का मंच होता है हमें जब भी जहाँ से जो भी मिले धन्यवाद देने का हमारा कर्तव्य एवं दायित्व तो बनता है इसमें हम कोताही नहीं करें। धन्यवाद !

रामनिवास गोलस (भाईजी)

व्याष्टि जीवन में साधुता, सबसे महत्वपूर्ण है।
साधुता से सध्यता बने इसके बिना सब अपूर्ण

-बाबा

विषय सूची

(I) प्रकाशक	3
(II) सनातन प्राकृतिक धर्म	4
(III) धर्म का आधार	5
(IV) दो शब्द	6
(V) आर्शीवचन	8
(1) (अ.) राम गोपाल का परिचय	10
(ब.) सामाजिक गतिविधियाँ	12
(स.) वार्षिक गतिविधियों की झलक	13
(द.) हमारे जीवन चक्र—वार्षिक गतिविधियों की झलक	14
(2) जीवन का वार्षिक ब्यौरा	15
(3) हमारे जीवन अनुभव	23
(4) (अ.) जीवन फुलझड़ियाँ	24
(ब.) जीवन पथ पर मार्ग दर्शन वचन/मंत्र	25
(5) जीवन में सबक	27
(6) अंतिम अरदास एवं परमपुरुष का आर्शीवाद	30
(7) जीवन मंत्र	31
(8) आनंद वाणी	35
(9) अक्षर प्रभात का अर्थ?	38
(10) शुभचिंतकों के संदेश रामगोपाल बंसल के प्रति	40—60

जिंदगी में हार ना मानना ही जीवन की पहली निशानी है, स्वस्थ रहे—मरत रहें।

धर्म से हीन प्राणी जीते जी भी मृतक के समान ही है। जबकि धर्म परायण व्यक्ति मृत होने पर भी दीर्घ जीवी है। इसमें कोई सदेह नहीं है।

—चाणक्य

1.(अ.) राम गोपाल का परिचय

- 6**
- | | |
|---------------------|---|
| नाम | — राम गोपाल (राम गोपाल बंसल) |
| पत्नी | — स्व. डा. प्रभा बंसल — बी.एस.सी. डीएचबी (पूर्व) अध्यक्षा लायन्स क्लब, ट्रस्टी अक्षर प्रभात ट्रस्ट |
| माताश्री | — स्व. सूरजमुखी जी — धर्म प्रेमी सीधी सादी, कर्मशील घरेलू महिला जन्मतिथि 1920 ईसवीं |
| पिताश्री | — स्व. नन्नमल जी— सीधा सादा व्यक्तित्व तपस्वी परोपकारी, जन्म तिथि 1900 ईसवीं |
| शिक्षा | — सरकारी स्कूल खुडबुढ़ा मोहल्ला देहरादून—आँठवी कक्षा तक महात्मा गांधी हायर सेकेन्डरी स्कूल, पिपलानी, भेल भोपाल ग्यारहवी कक्षा। 1969 ईस्वी सरदार बल्लभ भाई पालिटेक्निक, भोपाल से सिविल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा प्राप्त किया। कई प्रकार के कोर्स समयानुसार किये गये। |
| दीक्षा एवं आर्शीवाद | — 1984 ईसवीं में आचार्य चन्द्र भूषण (गुरुजी), रहेटी 2000 ईसवीं आचार्य अमलेशानंद जी अवधूत और आचार्य प्रियतोषानंद जी से ध्यान, दीक्षा प्राप्त की। दीक्षा के बाद लगातार आज तक साधना एवं मार्ग के कार्य में लिप्त हूँ। 2011 ईस्वी में परम पूज्य संत सम्राट उर्फ नेताजी सुभाष चन्द्र जी का आर्शीवाद प्राप्त हुआ उसके बाद से ही उनके बताये जा रहे कार्यों में लिप्त। 2005 ईस्वी में स्वामी मुक्तानंद स्वरूपती जी हरिद्वार का आर्शीवाद प्राप्त हुआ (जिनकी भेंट प.पू. आनंदमूर्ति जी से हुई और मार्ग के कार्यों में भी लिप्त |

स्वावलम्बी बनो — परावलम्बी नहीं।



हुये जिन्होंने एम.बी.बी.एस.—एम.डी 1950 पास की थी।
वैवाहिक संस्कार
— श्रीमती प्रभा बंसल (माता श्री स्व.हीरा देवी गोयल पिता श्री स्व. पुरुषोत्तम दास गोयल) से शादी 1973 ईसवीं में हुई उनकी मृत्यु 14 जून 2009 को बैंगलोर में हुई।
पुत्र
— अभिषेक बंसल (B.E. MBA MS)
पुत्र पौत्री
— स्मिता बंसल (BE. MBA, MS)
— ईशा एवं रिया
पुत्री
— पूजा अग्रवाल (B.Sc., M.Sc., M.A.)
दामाद
— चिरंजीव अग्रवाल (B.E. ME. M.S.)
नाती
— अनिरव अग्रवाल
भाई
1. स्व. रमेश चन्द्र — श्रीमती विजय बंसल अश्वनी—सीमा, दिग्विजय—वंदना, शशि—शालिनी
2. स्व. शिवप्रसाद — श्रीमती कृष्णा बंसल अंशुमन — अंजली, शैल—संजीव, शचि—पीयूष
3. राधेश्याम — श्रीमती सुधा बंसल अविनाश—शीतल, अमित — श्वेता, आलोक —दिव्या
4. रामगोपाल - स्व प्रभा बंसल
अभिषेक - स्मिता, पूजा-चिरंजीव
5. कृष्ण गोपाल — स्व. शशि बंसल काजल—चंदन, नितिन—अपर्णा, दीपिका—अनुराग
बहन
— स्व. श्रीमति सुशीला देवी गर्ग — श्री यत्तीश गर्ग संजीव — वंदना, सीमा — चन्द्रेश, संगीता — नरेश
सामाजिक दायित्व
— साधारण सदस्य — शिरडी साई संस्था, शिरडी
जीवन्त सदस्य— (Life Time Member)— आवा कलब, बी.एच.ई.एल., भोपाल

7



- | | |
|----------------------|--|
| सदस्य | — (केन्द्रीय कारिकारिणी सदस्य)– राष्ट्रीय सैनिक संस्था, गाजियाबाद। |
| पूर्व सचिव | — इंडट्रीज एसोसियेसन गोविन्दपुरा, भोपाल |
| पूर्व अध्यक्ष | — फाईवर ग्लास वेलफेर एसोसिएशन , भोपाल |
| पूर्व अध्यक्ष | — भोपाल इलेक्ट्रीकल ट्रेडिंग एसोसिएशन |
| पूर्व संरक्षक | — लायन क्लब बी.एच.ई.एल. भोपाल |
| संरक्षक | — ज्ञानदीप शिक्षा समिति, भोपाल |
| संरक्षक | — प्रभात संस्कृति मंच, भोपाल |
| 1969–1972 | — प्रभात सर्व—समाज मंच, भोपाल |
| 1972 –2004 | (नौकरी) झांसी Supering of Civil उद्योगों की स्थापना |
| 1986 –2022 | मार्किंग इलेक्ट्रीकल प्रोडक्ट |
| 02.04.2002 | — अक्षर प्रभात की स्थापना योजना |
| 12.12.2003 | — अक्षर प्रभात ट्रस्ट पंजीयन शुरू अक्षर प्रभात ट्रस्ट एवं अक्षर प्रभात प्रकाशन यथावत |

1.(ब.) सामाजिक गतिविधियाँ

अक्षर प्रभात ढारा निम्न कार्यक्रम संचालित :-

- स्वास्थ्य—सामाजिक—आध्यात्मिक एवं नव्यमानवता के जीवन मूल्यों पर आधारित मातृभूमि को समर्पित ”अक्षर प्रभात” मासिक पत्रिका एवं अन्य जीवन उपयोगी साहित्य का प्रकाशन वर्ष 2002 से लगातार
- साहित्य प्रकाशन लगभग 60 पुस्तकों की सूची और 20 अप्रकाशित।
- विज्ञान का आध्यात्मीकरण—आध्यात्म का वैज्ञानीकरण पर प्रस्तुतीकरण।
- पारम्परिक आदिकालीन सनातन सांस्कृतिक अभियान।

- स्वास्थ्य, स्वदेशी एवं विज्ञान क्रांति ।
- गौ- पालन (भारतीय देशी गाय), उत्पाद एवं संरक्षण अभियान
- अक्षर प्रभात जल एवं पर्यावरण सैनिक क्यों बने ? अभियान
- अक्षर प्रभात स्वदेशी, योग, प्राकृतिक एवं वैकल्पिक चिकित्सा अभियान ।
- “नव्यमानवता” स्थापना अभियान ।
- अक्षर प्रभात स्वर विज्ञान अभियान ।
- अक्षर प्रभात भारतीय खेल उत्थान अभियान

सामाजिक दायित्व हमारे गुरुदेव द्वारा

- आनंदमार्ग के कार्यों में लिप्त, आरयू रावा भोपाल (प्रभात संगीत) का कार्यक्रम 2011 से लगातार ।
- भारतीय सुभाष सेना, गोण्डा में निर्देशक पद पर नियुक्ति
- सत्य ओम जयगुरुदेव सत्युग तीर्थ –नैमिषारण— अध्यक्ष राष्ट्रीय कार्यकारिणी ।
- सनातन सत्युग धर्म –नैमिषारण की स्थापना 12.12. 2002 और 2 अप्रैल 2022 यानि नवसंवंवसर दिवस से कार्य शुभारंभ होगा ।

1. (स) हमारे जीवन चक्र - वार्षिक गतिविधियों की झलक

वाल्यकाल	02.04.1947–1962	जन्म से देहरादून में
	1962–1964	भोपाल आगमन, पढ़ाई
यौवनकाल	1964–1969	पढ़ाई
	1969–1976	व्यापारिक
	1976–1984	व्यापारिक
	1984–2000	गुरुजी से भेंट, व्यापारिक गतिविधि सुचारू रूप से

पूरे संसार में ईश्वर ने केवल इंसान को ही मुस्कुराने का गुण दिया है। इस गुण को रघोड़े मत, परिस्थितियां चाहे कैसी भी हो-हमेशा मुस्कुराते रहो।

2000–2002	आनंदमार्ग दीक्षा प्राप्त एवं सामाजिक दायित्व
2002–2005	अक्षर प्रभात स्थापना
2005–2009	सामाजिक गतिविधियां
2009–2015	व्यापारिक गतिविधियाँ से दूरी एवं सामाजिक गतिविधियाँ
2015–2018	सामाजिक गतिविधियाँ
2018–02.04.2022	सामाजिक गतिविधियाँ

1. (द) हमारे जीवन चक्र - वार्षिक गतिविधियों की झलक

वाल्यकाल	02.04.1947–1962	जन्म से देहरादून में भोपाल आगमन पढ़ाई
यौवनकाल	1962–1964	पढ़ाई
	1964–1969	व्यापारिक
	1969–1976	व्यापारिक
	1976–1984	गुरुजी से भेंट, व्यापारिक गतिविधि सुचारू रूप से
	1984–2000	आनंदमार्ग दीक्षा सामाजिक दायित्व
	2000–2002	अक्षर प्रभात स्थापना
	2002–2005	सामाजिक गतिविधियां
	2005–2009	व्यापारिक गतिविधियाँ से दूरी एवं सामाजिक गतिविधियाँ
	2009–2015	व्यापारिक गतिविधियाँ से दूरी एवं सामाजिक गतिविधियाँ
	2015–2018	सामाजिक गतिविधियाँ
	2018–02.04.2022	सामाजिक गतिविधियाँ
	02.04.2022 से

बदल जाओ वक्त के साथ या फिर वक्त बदलना सीखो,
मजबूरियों को मत कोरों हर हाल में चलना सीखो ।

2. जीवन का वार्षिक व्यौरा

बाल्यकाल 1947-1962

रामगोपाल का जन्म ईस्वी अनुसार 2 अप्रैल 1947 भारतीय सनातन संस्कृति के अनुसार चैत्र मास सम्वत् 2004 दिन बुधवार, निवास स्थान पलटन बाजार देहरादून (उ. प्र.) (अब जो उत्तराखण्ड राज्य की राजधानी में तब्दील हो गया) बंसल परिवार में हुआ हमारे पिताश्री स्वर्गीय नन्नूमल जी एवं माताश्री सुरजमुखी जी और परिवार में हमारे अग्रज भ्राता स्वर्गीय रमेश चन्द्र बंसल, अग्रज बहन स्वर्गीय सुशीला देवी गर्ग, अग्रज भ्राता स्वर्गीय शिव प्रसाद बंसल, अग्रज भ्राता राधेश्याम बंसल एवं छोटे भ्राता कृष्ण गोपाल जी के घर हुआ।

हमारी बहन सुशीला जी के बताने के अनुसार हम बाल्यकाल में बड़े हष्टपुष्ट थे हमें बचपन में कई बार इनाम भी मिले थे।

भोपाल आगमन - 1962-1968

वर्ष 1962 को हम माताश्री, छोटे भाई कृष्ण गोपाल एवं बड़े भाई राधेश्याम जी के साथ जुलाई माह में भोपाल, हमारे बड़े भाई साहब श्री रमेश चन्द्र बंसल जी के घर पधारे जो बी.एच.इ.एल में इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे।

भोपाल को भूपाल के नाम से जाना जाता था और मौसम बड़ा सुनहरा था सब जगह हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही थी गर्मियों में भी और ठंड सी महसूस हो रही थी।

वर्ष 1964 ब्रह्ममूर्त 4-5 बजे के दौरान हमे एक ज्योति दिखाई दी और आदेश दिया तुम विकलांग लोगों के लिये कुछ करों क्योंकि उस समय हमारी आयु 16-17 की थी उसी समय हमने मध्यप्रदेश सरकार को पत्र भेजा जो निम्न है। और उनका जबाब भी प्राप्त हुआ।

9

1968-1976

हमारे द्वारा सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने पश्चात हमने झांसी (उ.प्र.) में एक वर्ष बिल्डिंग निर्माण का अनुभव प्राप्त किया। इसी बीच हमारे स्व. श्री रमेश चन्द्र बंसल (अग्रज) जी ने एक प्रस्ताव रखा कि हम एक उद्योग लगाने का विचार कर रहे हैं और उनके द्वारा एक प्राडक्ट का डिजाईन किया गया जो अभी तक यानि 1972 तक बाहर से आयात होता था उसका निर्माण करने का विचार आया वह उस समय भेल भोपाल में कार्यरत थे उनका प्रस्ताव था 50 रुपये महीना खाना-पीना फ्री। उनका प्रस्ताव हमने सिर आँखों पर रखा, हमने बंसल ब्रदर्स के नाम से कार्य शुरू किया फिर कार्य गति लेने लगा तब वित्त (फण्ड) की परेशानी महसूस होने लगी फिर हमने क्वालिटी इंसुलेशन एण्ड प्राडक्ट्स के नाम से उद्योग, पार्टनरशिप में शुरू किया जिसका अंतराल 1969-1972 तक रहा, उसके बाद हमारा छोटा भाई श्री कृष्ण गोपाल इंजीनियरिंग पास करने के बाद नौकरी की तलाश में थे उनको भी इसी कड़ी में जोड़ लिया गया। परिवार का भार हमारे बड़े भाई साहब श्री रमेशचन्द्र एवं श्रीमती विजय बंसल के ऊपर आ गया।

हमने इंटरप्राइजिंग इंजीनियर्स (जिसके प्रोपराइटर, मालिक कृष्ण गोपाल) नाम से एक उद्योग खड़ा किया जिसके कारण क्वालिटी इंसुलेशन एण्ड प्राडक्ट में खीचतानी हुई फिर हमने अपनी साझेदारी निकाल ली फिर हमने छोटे भाई की कंपनी में मैनेजर के रूप में कार्य किया, परमपुरुष की आसीम कृष्ण से दिन पर दिन कार्य गति पकड़ता गया उसके पश्चात हम लोगों ने भोपाल में एसोसिएड एवं प्रवीण उद्योग के नाम से उद्योग की स्थापना की और जबलपुर में इंजीनियर्स नाम से उद्योग की स्थापना की। जो डिफेंस की एंसलेरी बनी और हमारे अग्रज शिवप्रसाद एवं राधेश्याम जी जो जबलपुर में कार्यरत थे उन्होंने अपनी नौकरी से त्याग पत्र देकर उद्योग की स्थापना की।

इस प्रकार हमारे चारों भाई उद्योग में लिप्त हो गये। बड़े भाई श्री रमेश चन्द्र बंसल जी भेल में कार्यरत रहे। वर्ष 1978 में उन्होंने ने भी

भेल से त्याग पत्र दे दिया। हम सबने मिलकर उद्योगों को आगे बढ़ाने में लग गये।

1976-1984

सन् 1976 महीना नवम्बर का सूबह ब्रह्ममूहर्त में यानि 4.30 प्रातःकाल एक प्रकाश पूंज के दर्शन हुये और आदेश सबको छोड़कर मेरे काम में लग जाओं परंतु मेरे द्वारा कहा गया। आपके द्वारा हमारी शादी, फिर बच्चे होने के पश्चात् अब उन तीनों आत्माओं को किसके जिम्मे छोड़कर जायें यह सब संसारिक जिम्मेदारी से दूर भागना होगा। अब हम अपनी संसारिक जिम्मेदारी को समाप्त करने के बाद ही आपकी शरण या आपके द्वारा बतायें कार्यों को करने में सक्षम होंगे।

वर्ष 1980 में हमारी धर्मपत्नी की बहुत घनिष्ठ मित्र डॉ. कुमुद निगम से अचानक मुलाकात हुई। उन्होंने एक ज्ञानदीप शिक्षण समिति बनाई हुई थी। उसमें हमें संरक्षक एवं हमारी धर्मपत्नी को सदस्यता प्रदान की गई। ज्ञानदीप हायर सेकेण्डरी स्कूल, बरखेड़ी में बहुत ही सुचारू रूप से, अनुशासित एवं सत्यता पर चल रहा था परंतु वर्तमान वातावरण में न ढल पाने के कारण उसमें बच्चों की संख्या कम होती चली गई।

हमें श्री के.एस. अस्थाना जी (धर्म भाई) का भी काफी सहयोग ज्ञानदीप स्कूल एवं हमारे परिवार को मिलता रहा। जो एक व्यक्तित्व के धनी, कर्मठ एवं कर्मशील की छवि रखते हैं।

1984-2000

वर्ष 1984 को हम अपने परममित्र भूषण ठाकुर के साथ रहेटी गये उन्होंने हमें परम आदरणीय चन्द्रभूषण जी तिवारी यानि गुरु महाराज के दर्शन करवाये और दीक्षा प्राप्त की जो हमें नियमित प्रतिदिन दोनों समय करने के लिये कहा गया और बताया कर्म पर एवं ज्ञान पर अपना समय लगाये और जीवन का लक्ष्य तय करे। परंतु उद्योग की गतिविधि निरंतर आगे बढ़ रही थी इस इस कारण हम ध्यान-साधना नहीं कर

10

पा रहे थे। इस कारण हमें गुरुजी से हमेशा डांट लगती रही और उसके बावजूद उनकी कृपा हमेशा बनी रही जबसे हमने गुरुजी से ध्यान-साधना ली थी उसके 16 वर्ष पश्चात् गुरुजी बाले आप हमारे गुरुभाई हो आपके गुरु श्री श्री आनन्दमूर्ति जी हैं जो आनन्द मार्ग प्रचारक संघ के संस्थापक हैं वहीं आपके गुरु हैं हम नहीं, हम तो आपके सबके गुरु भाई हैं। गुरुजी का आशीर्वाद हमेशा हमारे ऊपर बना रहा।

2000-2002

जिन्दगी बहुत विचित्र जिसको मैंने समझा 1984 के 16 साल बाद जब मैंने गुरुदेव से योग साधना की दीक्षा ली परंतु मेरे द्वारा उसकों यानि मंत्र जाप इत्यादि को लगातार कर नहीं कर पाया जब गुरुदेव की डॉट लगी। उनके बताने पर वर्ष 2000 में तो दुबारा मैंने आचार्य अमलेशानन्द जी के समक्ष साधना की दीक्षा ली यानि 16 वर्ष बाद। आत्मा का परमात्मा में विलय ही योग है, वह जाना।

हमारे शरीर में सर्वदा ही एक चेतना विधमान रहती है। और यह हमारी स्थिति को सुधारने के लिये कार्य करती रहती है वह निरंतर हमें उन बाधाओं के सम्मुख उपस्थित करती रहती है। जो हमें उन्नति करनें से रोकती है। हमारे सिर को हमारी ही भूलों और अंधताओं से टकरा देती है। परंतु यह बात केवल उन्हीं लोगों के लिये ही घटित होती है। जिन्होंने योग करने का निश्चय किया है।

बल्कि दूसरों के लिये वह चेतना प्रगति कराने वाली एक ज्योति, एक ज्ञान, एक शक्ति के रूप में काम करती है। जिसमें तुम अपनी अधिक से अधिक क्षमताओं को आयात कर सकों, तुम अधिक से अधिक अनूकूल वातावरण में जहाँ तक सम्भव हो वहाँ तक अपने—आपकों विकसित कर सकों, परंतु वह आपकों चुनाव करने के लिये पूर्णतः स्वतंत्र छोड़ देती है।

क्योंकि यह निर्णय अपने अंदर से ही आना चाहिये। जब हमने

अपना रास्ता चुन लिया तब हमें उस पर डटे रहना ही होगा। अब हमें हिचकिचाने का कोई अधिकार नहीं। अब हमें आगें ही बढ़ना होगा।

मनुष्य योग— जो सभी कामों में अत्यंत कठिन काम है। केवल तभी कर सकता है। जब वह अनुभव करें कि यहाँ यानि पृथ्वी पर केवल इसी के लिये और अन्य कोई काम नहीं करना है। यही हमारे अस्तित्व का एक मात्र कारण है। यदि हमें कठिन परिश्रम करना पड़े, उसमें कोई कमी नहीं हुई, दुखः भी झेलना पड़े, संघर्ष भी करना पड़े और कर भी रहे हैं। तो भी ‘बाबा’ की कृपा है। कोई परवाह नहीं, जो कुछ भी अच्छा या बुरा करेंगे बाबा ही करेंगे। हम तो उनके आदेश का पालन करते रहेंगे। श्री चंद्रभूषण तिवारी जी का अंतकाल फरवरी 2002 (अहमदाबाद) में हो गया जिसने हमको काफी विचलित किया।

2002-2009

वर्ष 2001 में पुत्र अभिषेक द्वारा पुत्री पूजा का दाखिला डलास (Dallas) टेक्सास अमेरिका में करवा दिया था परंतु दो बार पुत्री पूजा का वीसा अमेरिका कॉउंसिल द्वारा मनाही होने पर पूजा अपनी आगे की पढ़ाई हेतु अमेरिका नहीं जा सकी, उस रात में अपने ईष्ट यानि सदगुरु बाबा से खूब झंगड़ा किया एवं रोया। अपनी सारी बाते बताई। उसी दौरान हमारे द्वारा सनातन से सम्बन्धित विचार उत्पन्न हुये। इसी कड़ी में हमने वर्ष 2002 में अक्षर प्रभात ट्रस्ट की स्थापना की।

जब हमने वर्ष 2000 में आनन्दमार्ग की साधना ली उसी अनुसार हमारी ध्यान साधना चलती रही परंतु जैसा हमने सोचा था संस्था में गतिविधियों को आगे बढ़ाया जाये हमें अनुकूल वातावरण मिलने के कारण हमने 2 अप्रैल 2002 को अक्षर प्रभात ट्रस्ट की स्थापना की।

अक्षर प्रभात प्रकाशन द्वारा एक मासिक पत्रिका 4 पृष्ठ से शुरू की थी फिर 12 पृष्ठ, 16 पृष्ठ और पाठकों की बढ़ती मांग को ध्यान में रखकर परिवर्तित माह अक्टूबर 2010 से नये स्वरूप में प्रकाशित “अक्षर प्रभात” प्रत्येक माह 38 पृष्ठों की पत्रिका प्रकाशित की जा रही

है जो लगातार आप सबके आशीर्वाद से प्रकाशित हो रही है।

हमारे बहुत ही नजदीकी, शुभचिंतक द्वारा किसी पार्टी से मिलवाया गया जिन्होंने हमें कुछ फंड उपलब्ध कराने का वायदा किया हमने कुछ प्राप्त नहीं किया परंतु उसमें हमें काफी हानि हुई पैसे से भी और समय से भी। शायद परमपुरुष को यही मंजूर होगा। हमने उस पार्टी एवं शुभचिंतक को कभी भी गलत व्यवहार नहीं किया क्योंकि हम “बाबा” के बताये मार्ग यम-नियम से बंधे हुये थे।

2009-2013

वर्ष 2009 में हमारी श्रीमती प्रभा जी का देहान्त बैंगलोर में हुआ। उसी दिन दिनांक 14.6.2009 को प्रातः हमें आभास हो गया था उस समय प्रातः के 5:00 बजे हम साधना में चले गये, करीबन सुबह 8:00 बजे एक नर्स ने हमें सूचित किया कि आपकी श्रीमती का स्वर्गवास हो गया है। यानि उनको मुक्ति मिल गई इसी दरम्यान हमारे सुपुत्र अभिषेक एवं सुपुत्री पूजा एवं चिरंजीव को सूचित किया गया। हमने उनको बताया कि बैंगलोर के शमशान घाट जिसमें विद्युत शवदान की सुविधा हो वही हम जायेंगे उसी प्रकार दाह संस्कार करने के बाद हम सब भोपाल रवाना हुये। उनकी अस्थि का विसर्जन होशंगाबाद में किया गया उसके बाद भोपाल में शांति पाठ करवाया गया और उनको श्रद्धांजलि दी गई और कार्यक्रम समाप्त हुआ।

हमारी श्रीमती प्रभा जी असाधारण प्रतिभा एवं बौद्धिक क्षमता की धनी थी। समस्याओं के तुरंत निदान के गुण, सौम्य प्रकृति एवं सदस्य उत्साह के लिये एवं हमें समय-समय पर सुझाव देती रहती थी। उनके साथ हमने 36 वर्ष 7 महीने 22 दिन गुजारे। उनके त्यागमय जीवन, सत्य की ओर चलने की उनकी सहज प्रवृत्ति एवं दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर वे आदर्श भारतीय नारी थीं जो हमेशा प्रेरणा की स्त्रोत थीं और रहेंगी।

वर्ष 2007 में हमें किसी शक्ति द्वारा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के स्वर्ज को पूर्ण करने का आदेश प्राप्त हुआ उसको हमने अपने राष्ट्रीय

अध्यक्ष राष्ट्रीय सैनिक संस्था गाजियाबाद को बनाया। उसको हमने लिपीबद्ध किया।

वर्ष 2010 में श्री अरविन्द जी के साथ लखनऊ में भेंट हुई उस समय हमारे साथ हमारे धर्मभाई रघुराज सिंह सिसोदिया जी भी थे। जिनके द्वारा लिखित पुस्तक “मैं कब तक चुप रहूँ” नेताजी सुभाष चन्द्र बोस पर लिखी थी उस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात हमने भोपाल में श्री संजय शुक्ला एवं आगरा में रघुराज सिंह से चर्चा की। तब हमें पूर्ण जानकारी नेताजी के बारे में मिली हमें बहुत ही अच्छा लगा।

वर्ष 2011 में प्रभात संगीत एक शाम का हमारे निवास पर आयोजन किया गया। यह सब किसी प्रेरणा से हुआ हमें प्रभात संगीत या अन्य संगीत पर ज्यादा कोई लगाव नहीं था परंतु यह कार्यक्रम कैसे हुआ हमें आज तक समझ नहीं आया।

वर्ष 2012 से प्रभात संगीत का कार्यक्रम श्री नरेन्द्र देव के अथक प्रयास से लगातार हो रहा है उन्हीं के अथक प्रयास से राव भोपाल चेप्टर की शुरूआत हुई जिसमें आज तक 300–400 कलाकारों ने प्रभात संगीत को समझा और उसका गायन किया।

हमारा विचार की प्रभात संगीत को भोपाल के प्रत्येक घर पर पहुंचाया जाये। बाबा की अपार कृपा होगी जो पूर्ण होगी ही।

2013-2022

वर्ष 2012 हम हमारे मित्र श्री भूषण ठाकुर जी के घर भोजन के लिये गये तब ही हमारे मन में एक विचार आया क्यों न भोपाल में आनन्दमार्ग का धर्म महासम्मेलन क्यों न करवाया जाये इस विचार को हमने अपने परम मित्र को बताया उन्होंने भी इस की स्वीकृति दे दी। उसी दौरान अहमदाबाद में धर्म महासम्मेलन जाने का मौका मिला। भोपाल में धर्म महासम्मेलन की चर्चा अन्य मार्गियों से हुई सभी ने हाँ भर दी। भोपाल से प्रस्ताव आनन्द नगर परलिया भेजा गया। तभी हमारा आनन्द नगर में धर्म महासम्मेलन में जाना हुआ और बहुत ही कोशिशों के बाद भोपाल में डी.एम.एस. की आयोजन की अनुमति प्राप्त

हुई जिसमें आई.एल. कौरे जगदीश मालवीया एवं आचार्य धीरजानंद जी का भी सहयोग प्राप्त हुआ और हमें इस कार्यक्रम का अध्यक्ष बनाया गया। बाद में हमने कुछ कारणों से त्याग पत्र दे दिया था।

सितम्बर 2013 में भोपाल में धर्म महासम्मेलन बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसके अध्यक्ष श्री भूषण ठाकुर एवं भोपाल के समस्त ग्रहीयों का अनन्त सहयोग प्राप्त हुआ। हमारे ज्ञान अनुसार भोपाल का डी.एम.एस. काफी सुनियोजित रहा जिसको सभी ने सराहा।

धर्म महासम्मेलन में एक पत्रिका का भी विमोचन हुआ जिसको हमारे श्री इन्द्रमणि तिवारी जी की गहन मेहनत से प्रकाशित किया गया और इसी अवसर पर अक्षर प्रभात परिवार द्वारा भी एक पत्रिका का प्रकाशन करवाया गया।

भोपाल में वर्ष 2017–2018 में क्षेत्रीय प्रउत्त का आयोजन आचार्य दयाशिखरानन्द अवधूत में किया गया जो एक सफल आयोजन रहा। जिसमें हमें इस कार्य का संयोजक बनाय गया था। वर्ष 2018 में हमारे द्वारा आनन्दमार्ग साहित्य का पुस्तकालय भी बनाया गया है जिसमें लगभग 350 पुस्तकें उपलब्ध हैं। हमारा ध्येय है “बाबा” के बताये कार्यक्रम को जन–जन तक पहुंचाया जाये। जिससे मानव–मानव में एकता हो और सब मिलकर रहे।

वर्ष 2019 में हमारी इंजी. राजेश सिंह से सप्रेम भेंट हुई जो आनन्दमार्ग के दीक्षार्थी भी है उनकी प्रतिभा और लगन ने हमें उनके समीप कुछ करने की कृपा हमारे परमपुरुष द्वारा ही की होगी और हमने मिलकर समाज में कई कार्यक्रम किये और कर भी रहे हैं। उसी कड़ी में हमने सदविप्र फांउडेशन की स्थापना आनन्द मार्ग के उद्देश्य को ध्यान में रखकर की।

वर्ष 1973 से आज तक हम लॉयन क्लब के सदस्य हैं जो एक सामाजिक संस्था के रूप में कार्यरत है।

हमें हमेशा पुत्र अभिषेक एवं पुत्रवधु स्मिता बंसल, पुत्री पूजा अग्रवाल एवं दामाद चिरंजीव अग्रवाल जी ने अपनी ओर से पूर्ण

सहयोग समयदान—धन इत्यादि से की, उसका हम तहदिल से आभारी है। अविनाश बंसल जी (भतीजा) के पास से हम कभी भी निराश होकर नहीं लौटे। वह हमेशा हमारा हौसला अफजाई करता रहा। हमारे धर्म भाई—बहन, धर्म पुत्रियों आदि का सहयोग हमें हमेशा मिलता रहा।

3. हमारे जीवन अनुभव

हमारे जीवन के 75 वर्ष बाबा की असीम कृपा से पूर्ण हुये मैं तो निमित मात्र हूँ उनके बतायें कार्य में लगा हुआ हूँ और जब तक सांस/प्राण रहेंगे कार्य करता रहूँगा हमारे बाबा जी ने कहा मरते—मरते करो, करते—करते मरो, उसी को अमल करने के प्रयास बाकी बाबा की कृपा।

हमारे बाबा (श्री श्री आनन्दमूर्ति जी) जो उत्तम कोटि के गुरु है उनका आर्थिक दायित्व देते रहते हैं। इस बात को सुनिश्चित करते रहते हैं। शिष्य उनके कार्य को निरंतर करता रहे। उसी कड़ी में हम उनके कार्य को अंजाम देने में लगे हुये हैं। और हम उनके आदर्श वाक्य को अपने आचरण में लाने के लिये प्रयासरत हैं।

जीवन पर एक दृष्टिकोण

जीवन को आनन्दमय बनाने के कुछ खास निमय :—

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के अनेकानेक नियमों का पालन तो दूर उन्हें याद रखना भी कठिन है लेकिन यदि हम कुछ खास नियमों का अनुसरण कर लें तो बहुत सी छोटी—मोटी त्रुटियां और कमियां स्वतः कम हो जाती हैं। जिसके फलस्वरूप हमारा जीवन एक मजबूत नींव का सहारा लेकर संतुलित व वांछित रूप ले सकता है।

जीवन के पौधे में मधुरता, उदारता, नम्रता एवं साहस की खुराक और प्रसन्नता का जल सिंचते रहो यही आनन्दमय जीवन का सच्चा पथ होगा।

4. (अ) जीवन फुलझरियाँ

फूल चाहे कितनी भी ऊँची ठहनी पर लग जायें
लेकिन
मिट्टी से जुड़ा रहता है। तभी खिलता है।

प्रभु के पथ पर चलते रहना
निस दिन मेरा यही काम है
जहाँ किया विश्राम कहीं पर
कहने भर को वही धाम है।
जीवन के क्षण बीत रहे हैं।
नित्य प्रातः अरु नित्य शाम है।
ठहर ना सकता अधिक दिवस
बस इसीलिये तो पथिक नाम है।
बस प्रभू के पथ पर निरंतर चलते रहे
यही जीवन की चाह है।

जिसका, जीवन लक्ष्य सर्वोपरि है तो फिर
आलोचना, तारीफ, विवेचना, कुछ मायने नहीं रखता

कुछ रास्ते पर आपकों अकेले ही चलना होगा कोई दोस्त ना कोई सम्बन्धी बस आपकी लगन और वो परमात्मा आपके साथ रहे इस कारण जीवन के खट्टे—मीठे दिन कटते रहे और जीवन के पचहत्तर वर्ष पूर्ण हुये।

मुनष्य बहुत कम समय के लिये पृथ्वी पर आया है। पुरा समय उसे अच्छे कामों में लगाना होगा। धोखेबाजी करके कोई मनुष्य अपना नुकसान नहीं करे। मनुष्य को सीधा होना होगा। प्रत्येक मुहूर्त काम में लगाना होगा। यही है निमय।

—श्री श्री आनन्दमूर्ति जी

४. (ब) जीवन पथ पर मार्ग दर्शक वचन/मंत्र

कल्याण के पथ पर चले, श्रेय के पथ पर नहीं।

आप अपने आदर्श के रास्ते पर चलते रहे। और नव्यमानवता धर्म के रास्ते पर चलते रहें।

उस दिन एक पिता की परवरिश सफल हो जाती है, जिस दिन उसका बेटा या बेटी यह बोले कि पापा अब आप घर बैठो, अब आपका बेटा घर संभालेगा।

हमने हर समय मन में कर्म की भावना ली और परमात्मा से यही प्रार्थना की है कि हे! परमपुरुष मेरी बुद्धि को सदा शुभ—पथ, सत—पथ पर परिचलित करते रहों मेरा धरती (पृथ्वी) पर जन्म सेवा में सार्थक हो मैं आपकी खुशी के लिये हमेशा तत्पर रहूँ।

हमने कभी भी चिंतन—वचन और कर्म में कोई अस्पष्टता (वेचना) नहीं की, हमेशा बाबा के बताये मार्ग पर चलते रहे— और चलते रहेंगे तब तक जब तक बाबा का आदेश रहेगा।

हम सन् 2000 से आनंदमार्ग से जुड़े और तभी से यम नियम के नियमों का जीवन पर्यन्त पालन कर रहे हैं। और अन्तिम क्षण तक करेंगे।

जीवन के चार लक्ष्य जिसको हमने जीवन में महसूस किया :-

1. पहला स्पंदन धड़कन
 2. चेष्टा क्रियाशीलता
 3. सामंजस्य अनुकूल या विपरीत परिस्थितियों के साथ तालमेल
 4. वृद्धि – विस्तार
- व्यक्ति को कभी भी मौके का इंतजार नहीं करना चाहिए क्योंकि – जो आज उपलब्ध है वो ही सबसे बड़ा मौका है।

जरूरी नहीं आप वक्त के साथ चलें,
सच के साथ चलिये एक दिन वक्त आपके साथ चलेगा।

- अक्षर प्रभात

दीपक बोलता नहीं उसका प्रकाश ही उसका परिचय देता है इसी तरह अपने बारे में कुछ ना कहें बस अच्छे कर्म करते रहें वहीं हमारा परिचय है।

भक्त सदैव अपने प्रियतम प्रभू की गोद में रहते हैं। मृत्यु के पहले भी मृत्यु के बाद भी। हमारे प्रियतम बाबा के आदेशानुसार—मरते—मरते करों और करते—करते मरो। इसी आदेश का पालन करते हुये।

हे परम पुरुष आप मुझे इस धरती पर लाये हो अतः आपके सामने प्रकट होना होगा, क्योंकि मानव शरीर हमने आपकी कृपा के बल पर पाया है।

11

युवा अवस्था में कहीं पढ़ा था
अनाया सेन मरणम्, बिना दैन्येन जीवनम्,
देहान्ते तव सायुज्यम्, देहि में परमेश्वरम्।

भावार्थ- हे ईश्वर – बिना तकलीफ के हमारी मृत्यु हो और कभी भी बीमार होकर विस्तर पर पड़े—पड़े, कष्ट उठाकर मृत्यु को प्राप्त ना हो चलते फिरते ही हमारे प्राण निकल जायें

हे प्रियतम प्रभू – आओ – आओ, हे प्रियतम प्रभू आप आओ, मेरे हृदय में, मेरे मन वृद्धावन में, मेरे ध्यान चक्र में, अपने मनमोहक चेहरे पर मीठी प्यारी मुस्कान लिये अपने गुलाबी चरणों से आओं।

हे प्रभु! आपका मधुर नाम लेने से मेरे प्राण सिहरने लगते हैं। आपके मधुर आकर्षण में मैं रंग जाता है। हमारा सब कुछ, आपके नृत्य और गीत में समाहित हो जाये। प्राणों ही प्राणों में, आपका ध्यान करते—करते, हमारा मैपन, आप में लीन हो जायें— यही हमारी आपसे विनम्र प्रार्थना है प्रभु।

प्रसन्न वही है, - जिसने अपना मूल्याकंन किया
परेशान वही है जिसने दूसरों का मूल्याकंन किया

5. जीवन में सबक

- ◆ जरूरी नहीं कि शुरुआत सबकी अच्छी हो कुछ लोग हार कर भी बाजी जीत जाते हैं।
(चाणक्य)
- ◆ बेशक गलती भूल जाओं, मगर सबक याद रखों।
- ◆ दुनिया में अगर छोड़ने जैसा कुछ है तो दूसरों से उम्मीद छोड़ दो।
- ◆ हमारे संस्कार हमें झुकना सिखाते हैं। मगर किसी की अकड़ के सामने नहीं।
- ◆ जीवन में कई बार हम बड़ी—बड़ी परेशानियों से यूँ निकल गये मानों कोई है जो हमारा साथ दें रहा है। उसी अदृश्य शक्ति को हम परमात्मा कहते हैं। और महसूस भी करते हैं
- ◆ न संघर्ष न तकलीफ़
फिर क्या मजा है जीने में
तूफान भी रुक जायेगा
जब लक्ष्य रहेगा सीने में।
- ◆ पसीने की स्याही से लिखे पन्ने, कभी कोरे नहीं होते।
- ◆ जो करते हैं मेहनत दर मेहनत

12

उनके सपने कभी अधूरे नहीं होते।

- ◆ जो समय का मोल (मूल्य) समझता है समय उन्हे अनमोल बना देता है।
- ◆ कोई भी इन्सान ऐसे ही अपने आपको नहीं बदलता जिन्दगी में कुछ हादसे ऐसे हो जाते हैं। जो इंसान को बदलने पर मजबूर कर देते हैं।
- ◆ जो व्यक्ति गुणों को त्याग कर, अवगुणों को अपनाता है। उसे सफलता प्राप्त करने के लिये जीवन भर संघर्ष करना पड़ता है, व्यक्ति को सदैव श्रेष्ठ विचार अपनाने चाहिये, श्रेष्ठ गुणों को अपना कर ही व्यक्ति महान बनता है। महान बनने का रास्ता जटिल हो सकता है लेकिन असम्भव नहीं इसलिये व्यक्ति को अच्छे गुणों को अपनाने के लिये गम्भीर रहना चाहिये। उसी को अपनाये जीवन भर।
- ◆ मुझे कुछ नहीं चाहिये आप से,
बस कभी रो दूँ तो, मेरे सर पे हाथ आप का हो,
परेशान रहूँ तो ख्याल आप का हों
कहना हो कुछ तो जरा सा वक्त आप का मार्ग दर्शक के रूप में
थक जाऊँ तो — आपके चरणों का सहारा मिल जाये।
दुःख में हूँ तो — आपके आँखों का इशारा कि मैं हूँ ना.....
इसी को जीवन भर महसूस किया।
- ◆ किसी के कहने से यदि अच्छा या बुरा होने लगे तो ये संसार या तो स्वर्ग बन जायें या पूरी तरह से नक्क इसलियें ये ध्यान मत दो

कि कौन क्या कहता है। बस वो करो जो अच्छा है। और सच्चा है। सबके हित में है।

- ◆ ना हम नास्तिक है
ना हम आस्तिक है
हम तो केवल वास्तविक है।
जो अच्छा लगे उसे ग्रहण करते रहे
जो बुरा लगता है। उसे त्याग करते रहे,
फिर चाहे वो विचार हो, कर्म हो
धर्म हो – या फिर जो मनुष्य हो
- ◆ व्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित करने की अपेक्षा व्यक्तित्व पर ध्यान दीजिये। अधिकाशंतः सुंदर पुष्प में भी कीड़े पाये जाते हैं एवं उपेक्षित पत्थरें में भी हीरे मिल जाते हैं। पानी कितना भी गन्दा क्यों न हो किन्तु आग बुझाने के काम तो आ ही जाता है।
- ◆ परमपुरुष अगर है सूर्य तो पाप शक्ति है जुगनू। तो जुगनु से क्या डरोगे, क्या घबराओं? राह के रोड़ों से कोई इंसान डरता है। वे आगे बढ़ते जाते हैं। लात मार के नाली में फेंक देते हैं। बात तो यही है।
- ◆ मनुष्य को अस्तित्व उनका कर्म, उनका सब कुछ परमात्मा की कृपा पर निर्भरशील है यह बात जो मनुष्य जितनी कम उम्र में समझ लेते हैं वही उतने बड़े बुद्धिमान होते हैं।
- ◆ जहां जिस परिस्थिति जिस स्थान और जिस समय में जितना कर सकते हों, पीड़ित मानवता के लिये करो।

स्मरण रहे— व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं अपितु व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है। उस पर ध्यान दें।

जीवन में अंधा विश्वास एवं आलोचनाओं से दूर रहें। -अक्षर प्रभात

6. अंतिम अरदास एवं परमपुरुष का आर्शीवाद

प्रभू (बाबा) की कृपा से लगभग पूरा जीवन बहुत आनंदमय बिताया और बिता रहा हूँ

पितृ दासित्व से भली भांति मुक्त हो गया हूँ।

जगत की कोई सम्पत्ति किसी व्यक्ति विशेष की बपौती नहीं है। उस पर समस्त प्राणी जीव का अधिकार है इसी उद्देश्य से हमारे द्वारा अक्षर प्रभात ट्रस्ट की स्थापना की गई है। आज दिनांक तक हमारे पास काई भी सम्पत्ति नहीं हैं जो भी है। हमारे सुपूत्र अभिषेक-स्मिता की है और जो अक्षर प्रभात ट्रस्ट के नाम से है वह सब ट्रस्टियों की है उन सबसे निवेदन है कि वह कुछ समय निकाल कर समाजिक गतिविधियों में भी लगायें।

प्रभू की लीला अनंत हैं एक से एक बढ़कर उसकी लीला का कभी अंत नहीं हों सकता है। मनुष्य बहुत कुछ चाहता है परंतु प्रभु की लीला के सामने लाचार है।

प्रभू की लीला अद्भूत है। उस पर समर्पण ही कल्याण का एक मात्र पथ है।

आपके द्वारा जो भी दायित्व अभी तक दीये गये उन्हे पूर्ण करने के लिए कोशिश करता रहूँगा, जीवन पर्यन्त।

आपका शिष्य

रामगोपाल

(नव्यमानवता एवं प्रर्यावरण प्रेमी)

02.04.2022

जीवन में दो चीजों की गिनती करना छोड़ दीजिये।
अपना दुःख और दूसरो का सुख। फिर जिंदगी बहुत ही आसान हो जायेगी।

7. जीवन मंत्र

- ◆ प्राचीन काल में जो लोग अपनी नींद, भोजन, हंसी, परिवार, अन्य संसारिक सुखों को त्याग देते थे। उन्हें ऋषि मुनि कहा जाता था।
- ◆ जिसने एक सच्चा गुरु पा लिया, उसने मानों सारा संसार पा लिया माता-पिता बच्चे और दोस्त तो सभी के होते हैं। लेकिन गुरु का साथ सबको नहीं मिलता।
- ◆ दुनिया में सबसें तेज रफ्तार दुआओं की होती है। जो जुबान तक पहुंचने से पहले ही ईश्वर तक पहुंच जाती है।
- ◆ भक्त सदैव अपने प्रियतम प्रभु की गोद में रहते हैं। मृत्यु के पहले भी—मृत्यु के बाद भी जीवन में कभी—कभी आपको गिराने—गिराने वाले को यह नहीं पता होता कि आपकी वजह से ही वो खड़ा हुआ है।
- ◆ जिसकी सफलता नहीं रोकी जा सकती उसकी बदनामी शुरू कर दी जाती है।

(1) जमीर जिंदा रख कबीर जिंदा रख। (2) सुल्तान भी बन जायें तों दिल में फकीर जिंदा रख। (3) हौसले के तरकश में कोशिश का वो तीर जिंदा रख। (4) हार जा चाहे जिन्दगी में सब कुछ, मगर फिर से जीवन की उम्मीद जिन्दा रख।

- ◆ बच्चे जब जिन्दगी के फैसले लेने लगते हैं। अक्सर माँ—बाप ही मुजरिम ठहराये जाते हैं।
- ◆ जो लोग समझदार होते हैं वो अक्सर चीजों से बोर हो जाते हैं और ऐसे लोगों को बहस (Argument) बिल्कुल भी पसंद नहीं होती है। इसी वजह से वों हर चीज नोटिस तो करते हैं। लेकिन वो चुपचाप रहना पसंद करते हैं। क्योंकि उनकों लगता है। कि इस बहस में पड़ना उनके समय (Time) को खराब करना है और समय (Time) को अपने ईष्ट के कार्य में लगाना ही उचित रहता है।

जहाँ गलती ना हो, वहाँ मत झुकों,
और जहाँ इज्जत ना मिले वहाँ मत रुकों।

14

◆ तुम निश्चय ही यह कार्य करने में सफल हो जाओगे यदि वहाँ परमपिता की कृपा है। तुम क्यों नहीं करने में सफल हो पाओगे। तुम निश्चय ही कार्य करने में सफल हो पाओगे, कार्य करने के समय तुम हमेशा उनके साथ हो। वे तुम्हे हमेशा देख रहे हैं, तुम अकेले नहीं हो तुम कभी अकेले नहीं थे किसी भी परिस्थिति में तुम अकेले नहीं हो, अपने कार्य को गति देते रहों हमारी गति रुकी नहीं हमारी श्रीमती प्रभा जी हमकों 14 जून 2009 में छोड़कर चली गई उसके बाद भी हमारे कार्यों में कोई रुकावट नहीं आई यही हमारे “बाबा” की कृपा है। हमारे ऊपर, और हमें पूर्ण उम्मीद है। जब तक हम पृथ्वी पर हैं। यह कृपा बनी रहेगी।

◆ मैंने सबसे ज्यादा धोखा अपनी अच्छाई से खाया है। सामने बाले को वैसा ही मान लिया जैसा दिखा लेकिन बाद में पता चला कि यहाँ लोग रावण से भी ज्यादा चेहरे लिये फिरते हैं।

◆ परवाह ना करो चाहे सारा जमाना खिलाफ हो, चलो उस रास्ते पर जो सच्चा और साफ हो।

(1) कबीरा जब हम पैदा हुये, जग हँसे हम रोयें। (2) ऐसी करनी कर चलों हम हँसे जग रोये ॥

◆ सच्चे लोग अपनी सरलता और पवित्रता में संतुष्ट रहते हैं। वे किसी को भी प्रभावित करने की कोशिश नहीं करते, क्योंकि वे जानते हैं कि वे कौन हैं।

◆ हिम्मत—जुनून—हौसला आज भी वही है। मैंने जीने का तरीका बदला तेवर नहीं।

- (1) जिनमें अकेले चलने के हौसले होते हैं।
- (2) एक दिन उनके पीछे ही काफिले होते हैं।

◆ जिस इंसान की सोच और नीयत अच्छी होती है। भगवान्/परमात्मा उसकी मद्द करने किसी न किसी रूप में जरूर आते हैं। क्योंकि उन्होंने ही धरती पर भेजा है। कुछ न कुछ उद्देश्य से जिसको पूरा करना है।

- ◆ ऐसी कोई मंजिल, नहीं जहाँ पहुँचने का कोई रास्ता न हो।
- ◆ मतलबी नहीं हूँ मैं बस दूर हो गया हूँ उन लोगों से जिन्हें मंरी कदर न हो।
- ◆ भौकने वाले भौकना छोड़ नहीं सकते, तो फिर मरता चाल से चलता हाथी—इसको पढ़ा और अपनी जिंदगी में ढाला ओर अपने परमपुरुष यानि बाबा के बताये मार्ग पर निरंतर चल रहा हूँ और चलता रहँगा।

मेहनत और मेहरबानी

अब भगवान को दोष क्यों देते हो ? प्रकृति के प्रकोप को दोषी क्यों नहीं मानते ?

एक संत किसी गांव से गुजर रहे थे उन्होंने लहलहाते हुए गेहूँ के पौधों को देखकर कहा, 'भगवान की कृपा से इस बार फसल, बहुत अच्छी हुई है।' खेत के किनारे हुकका गुडगुड़ाते हुए किसान ने यह सुना, तो कुढ़ते हुए बोला, 'साधु बाबा, इसमें भगवान की कृपा कहाँ से आ टपकी। मैंने खूब—पसीना एक कर खेत जोता, बीज बोया तथा समय पर पानी दिया और परिश्रम के कारण ही खेत लहलहा रहा है। संत ने किसान के शब्द सुने तथा मुस्कुराते हुए आगे बढ़ गए। कुछ दिन बाद संत उसी रास्ते से लौट रहे थे उन्होंने उसी खेत के किनारे लगे पेड़ के नीचे विश्राम किया उन्होंने देखा कि गेहूँ के पौधे झुलसे पड़े हैं। उनमें कीड़ा भी लग गया था। किसान संत के लिये लोटा भर भी पानी लाया। संत ने भी दुखी मन से सहानुभूति व्यक्त की ओर कहाँ, 'भैया, बहुत बुरा हुआ। तुम्हारे हरे भरे खेतों को क्या हो गया ? किसान ने कहा, 'महाराज जी मुझे भगवान ने तबाह कर दियां तमाम फसल को कीड़ा चट कर गया। यह सुनते ही संत ने कहा, भैया, पिछले दिनों तो तुम लहलहाते खेत देखकर कह रहे थे कि भगवान की कृपा क्या होती है। सब मेरे परिश्रम का फल है। अब बेचारे भगवान को इस तबाही का दोष क्यों देते हो ? अपने प्रियंका या प्रकृति के प्रकोप को दोषी क्यों नहीं

15

मानते ? किसान समझ गया कि कुछ पाने के लिए परिश्रम के साथ—साथ भगवान अर्थात् प्रकृति की मेहरबानी भी जरूरी है।

जीवन में अहंकार कभी नहीं करना चाहिये परमपुरुष की बगैर मरजी के कुछ भी सम्भव नहीं हमें कोई कार्य उनकी उपेक्षा किये नहीं करना चाहिये।

दूसरो का हित करने में ही जीवन सार्थकता

संसार में सत्य को समझाने के लिए मनुष्य को भी संसार में सरल होने पड़ता है। धर्म को साधने के लिए ही यह शरीर मिला है इसलिए हम दूसरों के हित में लगे और उसी का ही चिंतन करें यही धर्म है। इसी में धर्म और मानव जीवन की सार्थकता है। हमारा छोटा सा स्वार्थ हमारे राष्ट्र और समाज को कितना बड़ा नुकसान पहुंचा रहा है। हर इंसान आज किसी ना किसी स्वार्थ में जी रहा है। इससे वह अपना ये लोक और परलोक दोनों बिगाड़ रहा है इंसान को इससे मुक्त रहना चाहिए। संसाधन, रहे या न रहें राष्ट्र रहना चाहिये।

"पाश्चाताप"

मैं क्षमा और मुक्ति मांगता हूँ उस परमपुरुष से, जिसके अलावा और कोई पूजे जाने के काबिल नहीं है। वह सदा रहने वाला और संसार को थामें रहने वाला (जगदाधार) है। और मैं उसको दंडवत् प्रणाम् करता हूँ।

आप ही पालनहार हो और आपके अलावा दूसरा नहीं। आपने ही हमें धरती पर भेजा है। और मैं आपका ही हूँ हमसे कोई गलती हुई हो तो हमें क्षमा कर दीजियेगा यदि हमने कोई बुरे कार्य किये हो किसी भी जीव को हानि पहुंचाई हो तो उसे मैं अंगीकार करता हूँ इसलिये आप मुक्ते क्षमा कर दें पापों को क्षमा करने वाला आपके अलावा कोई नहीं है।

—रामगोपाल
02.04.2022

8. आनंद वाणी

♦ विश्व के सभी लोग चल रहे हैं। रुक कर बैठने के लिये बैठ—बैठ कर रोने के लिये कोई नहीं आया है। इस चलते रहने में ही तो सत्ता की सहायता की सार्थकता है। इसी में अस्तित्व के विविध रंग का समारोह है। आगे की ओर अकेले बढ़ते चलो आगे की ओर सामूहिक रूप में बढ़ों। वह अथवा वे जो आज पिछड़े हुये हैं। चलने की राह में अपनी अकपट सहायता से उन्हें भी ज्योतिष्म करके उठा लो। तुम लोगों की जय हो।

— बाबा

♦ विश्व मानव के सामूहिक हित की बात को ध्यान में रखकर ही मनुष्य को उसकी समस्त योजनाओं की तैयारी करनी होगी। इससे उसके चलने की गति त्वरान्वित होगी और वह राह के काँटे को आसानी से हटा सकेगा। चलने की राह में बाधा आयेगी ही शुभ अशुभ सभी काम में बाधा आती है। परंतु वृहत् के परिप्रेक्ष्य में जो सोचा जाये जो किया जाये उसके भीतर अन्तर्निहित शक्ति उसके आगे चलने के सब प्रकार के साधन जुटाती है। हमें इस बात को भूलना नहीं है।

— बाबा

♦ सद्व्यक्ति नैतिकता में जितना ही अधिक दृढ़ हो पाप शक्तियाँ उनके विरुद्ध उतनी ही अधिक सक्रिय हो उठेगी। इसीलिये विश्व के समस्त नीतिवादियों को चाहियें संघबद्ध होकर रहना तथा संघबद्ध होकर ही पाप शक्ति का मुकाबल करना होगा।

— 'बाबा'

♦ विश्व के सभी, सभी के आत्मीय है। कोई भी घृणा नहीं..... अवश्वा सोग्य नहीं..... सभी समान रूपेण श्रद्धेय है सभी समान रूपेण स्नेह व प्यार के पात्र है। किसी भी समस्या को एक की समस्या कहकर या गोष्ठी विश्व समस्या को ही विश्व मानव की सामूहिक समस्या समझकर सामूहिक भाव से सभी समस्याओं का समाधान करेगे। अवश्य यही करेगे। यही हो आज की नूतन पृथ्वी के चलने की

राह का ध्वनि—मधुर आलेख, नव्य— मानवता के पथ का हमराही— सदा गुंजरित संगीत।

— "बाबा"

♦ जो अपना सर्वस्व वृहत् की भावना और महत् की प्रेरणा से उत्सर्ग कर सकता है, वही सचमुच सबसे बड़ा वीर है। ऐसे वीर ही वास्तव में धार्मिक है। और केवल वे ही मानव इतिहास को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने में समर्थ हैं।

— "बाबा"

कर्म ही मनुष्य को महान बनाता है। अपनी साधना, सेवा ओर तयाग के द्वारा महान बनों।

— "बाबा"

16

♦ हम अपने अतीत के अच्छे संस्कारों के कारण मनुष्य के रूप में जन्म लेते हैं। किन्तु मोक्ष प्राप्त करने हेतु उन्हे आत्मज्ञान प्राप्त करना ही होगा।

— 'बाबा'

♦ स्वयं को जानना ही यथार्थ ज्ञान, नारायण भाव से जीव की सेवा ही यथार्थ कर्म एवं परमपुरुष की आनंद देने का व्रत ही यथार्थ भवित है।

— 'बाबा'

♦ साधक मात्र ही सैनिक है। दुर्गम का कंटकाधाट ही उनकी अग्रगति का प्रतीक है। विश्व का सामूहिक कलयाण ही उनका जय तिलक है।

— 'बाबा'

♦ जिसे कोई मान नहीं देता, जिसे कोई सम्मान नहीं देता, जिसके अस्तित्व को कोई महत्व नहीं दता उसे भी मान दूंगा, उसे भी स्वीकृति दंगा। क्योंकि परमपुरुष ने स्वयं उस रूप में अपने को अभिव्यक्त किया है मैं उनके साथ यथायोग्य व्यवहार करूंगा।

— 'बाबा'

♦ आज समय पृथ्वी पर पाप शक्ति के साथ शुभ शक्ति का भयानक संघर्ष छिड़ा हुआ है। जो पाप शक्ति के विरुद्ध संघर्ष करने का सत्साहस रखते हैं वे ही संघर्ष से क्षत—विक्षत इस पृथ्वी पर शांति का सुखद स्पर्श दे सकते हैं। इस बात को याद रखो कि तुम लोग साधक हो। अतः पृथ्वी को बचाने का कठोर व्रत तुम्हें ही लेना है।

— 'बाबा'

पुनः निवेदन

अक्षर प्रभात परिवार का निवेदन

- ◆ ब्रह्म मुहर्त में उठे और अपने ईष्ठ का स्मरण करें
- ◆ बगैर मुँह घोये एक—दो गिलास कुनकुना पानी पीये।
- ◆ हमेशा सकारात्मक सोच रखें।
- ◆ सफलता का चिराग, परिश्रम से जलता है।
- ◆ इंसान की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसका मनोबल है।
- ◆ जिस हाथ से अच्छा कार्य हो, वह हाथ तीर्थ है।
- ◆ खुद की भूल स्वीकारने में कमी, संकोच मत करों।
- ◆ जीवन में अपना लक्ष्य निर्धारित करों
- ◆ जीवन में आलस्य को न आने दों।
- ◆ जीवन में दो चीजें आपका परिचय कराती (1) धैर्य (2) व्यवहार
- ◆ संघर्ष में ही जीवन है, जहाँ संघर्ष नहीं वहाँ जीवन शुन्य है—बचपन में पढ़ने—खेलने का संघर्ष—युवा में धन, शोहरत कमाने का संघर्ष।
- ◆ जीवन में प्रत्येक क्षण आनंद प्राप्त करें और जरूरत मंद को सहायता / सहयोग दें।

दिनांक 15.08.2017

समय 6:00 प्रातः

रामगोपाल

9425013154

**राष्ट्रप्रेम - स्वदेशी वस्तुयों से प्रेम यानि स्वदेशीमय बन जाओं -
तभी भारत अग्रणी बन सकेगा।**

- अक्षर प्रभात

जब दिल में बाह्य दिमाग में चालबाजी और बातों में अहंकार आ जाये तो समझो
कि रिश्तों की हार तय है।

-शिवप्रसाद बंसल, अग्रज

9. अक्षर प्रभात का अर्थ है ?

1. अक्षर प्रभात का अर्थ है।

संसार में कभी क्षर न (विभाजित / मृत) होने वाला ज्ञान – विज्ञान। भारत वर्ष कोई 1947 में पैदा हुआ देश नहीं है। हजारों साल की तपस्या से अपेक्षित धर्म एवं सनतन संस्कृति तथा उसे बनासे रखने वाले नियम इसे “इंडिया” बनाने से समाप्त थोड़े ही हो जायेगें ?

यह अंगेजी (मित्र देशों की द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की सांठ— गांठ थी) की चाल थी जो कि भारत के दो टुकड़े कर इण्डिया और पाकिस्तान बनाया। पाकिस्तान तो मि. जिन्ना और इस्लामियों के साथ अंदरुनी समझौते के अन्तर्त था और भारत के दूसरे टुकड़े का नाम देश में दंगे कराकर भय तथ लूट के मालौल में “इण्डिया” नाम इसलिये भी रखा गया ताकि देश की जनता हमेशा गुलाम की जाये और विदेशी भक्त बनी रहें ? क्योंकि सैकड़ों साल से देश के लोगों को “इण्डी नाम” से गुलामों के रूप में विदेशी मंडियों में बेचा जाता था। “इण्डिया” नाम ऐसा बताया जाता है। इसे सिद्ध करने के लिये एक पुस्तक भी लिख दी। इण्डिया की खेज (Discovery of India) जिसमें इण्डिया की भाषा, वेष—भूषा, संस्कृति, शिक्षा, अर्थव्यवस्था एवं शौर्य शुन्य था और अत्यंत रूप आत्महीनता प्रदर्शित की गई थी। आखिर सालों से तैयार किया मानव मस्तिष्क शुष्क नहीं होने वाला हम अपने—अपने देश हित के कार्य में लगे हैं। और आध्यात्म एवं सनातन का पुनर्जागरण करना है यही नव्यमानवतावाद है। और प्रत्येक देशभक्त भारतीय का परम कर्तव्य है। भारत की योगभूमि है। इस संसार में योग सिर्फ स्वस्थ रहने की कला नहीं है योग अगर आध्यात्म का मूल उपयोग कर सके तो वह विश्व ही नहीं ब्रह्ममाण्ड के दर्शन ने तो जग जाहिर कर दिखाया।

जब कुछ समझ ना आये तब शांत बैठकर खुद को समझ लेना चाहिये।

- अक्षर प्रभात

निश्चय ही विश्व में जो घटनायें होती हैं। वह ही नहीं होती ? वह काल—पात्र एवं आवश्यकतानुसार प्रकृति (ब्रह्म) को समन्वय तथा चक्र को पूर्ण होने की प्रवृत्ति भी होती है। शायद ईश्वरीय आदेश की पूर्ति हेतु हम सभी को एक मौका मिला है। तो “अक्षर प्रभात” के नाम को कारगर एवं बहुजल हिताय बहुजन सुखाय बनाने का तुच्छ प्रयास हैं।

2. अक्षर प्रभात का दूसरा रूप

अक्षर—अक्षर में ऊर्जा कर्ण है, शब्द—शब्द में ऊर्जा तरंग अनन्त पंक्ति, (अंकानू, वर्णन, संकेतानू) ज्ञान (कर्ण—तरंग) नवविज्ञान, दर्शन गणित ज्ञान—ज्ञान का उपयोग—प्रयोग विज्ञान, अक्षर प्रभात ही (कर्ण—तरंग) विज्ञान अक्षर प्रभात ही (कर्ण—तरंग) (Paritical + Wave) है। वर्वांटम गणित, योगीराज श्रीकृष्णजी का सांख्यायोग—दर्शन।

3. अक्षर प्रभात का तीसरा रूप

देवनागरी अक्षर में प्रत्येक अक्षर मंत्र स्वरूप है। इनका उपयोग काल, पात्र—मंत्र, तंत्र एवं यंत्र के रूप में ब्रह्माण्ड में समाहित है। जो जैसा चाहे हल करे लाभ लें। प्रभात—हमारे सद्गुरु प्रभात रंजन सरकार उर्फ श्री श्री आनंदमूर्तिजी का पहला अक्षर लिया गया पहिले प्रभात का अर्थ स्वयं में स्फूर्ति देने वाला, निन्द्रा को समाप्त कर जागरण को आमंत्रण।

4. अक्षर प्रभात का चौथा रूप

भगवान शंकर के उमरु से सबसे प्रथम ध्वनि का विकास हुआ ओम (अ उ म) के शब्द ध्वनि के रूप में ओम शब्द सृष्टि के विकास बीज मंत्र है। इस ओम में तीन अक्षरों का समावेश है। अ. उ. म! इसलिए कह सकते हैं। कि ओम (ॐ) में ही प्रथम अक्षर अ ही आता है। हमारी वर्णमाला में भी प्रथम अक्षर ‘अ’ ही है। इसके बाद अन्य अक्षर का अस्तित्व है। प्रभात शब्द का अर्थ है। राखिकालीन अंधकार से दिवय कालीन प्रकाश की ओर अग्रसर करने वाला।

इस प्रकार अक्षर प्रभात नाम का चयन हुआ

10. शुभविंतको के प्रशंसा संदेश

रामगोपाल बंसल के प्रति

- क. महेश दीक्षित (वरिष्ठ पत्रकार) सितम्बर
- ख. सुभाष जैन काला (अधिवक्ता कर सलाहकार)
- ग. पी. पी. अग्रवाल (IAS Retd.) Chairman (25.06.2012)
- घ. ओम प्रकाश नामदेव जी (ट्रांसलेटर तथा करसपांडेन्ट)
- ङ. बी. पी. सिंह (15.04.2018)
- च. श्याम कुमारी अग्रवाल (श्री अरबिन्दों आश्रम पांडिचेरी) (18.06.2009)
- छ. महावीर त्यागी (स्वाध्याय आश्रम पट्टीकल्याणा पानीपत (हरियाणा) (26.11.11)
- ज. लायन मुकेश माथूर (लायन डिस्ट्रिक्टगर्वनर) (17.01.11)
- झ. सरोज अग्रवाल, (गाजियाबाद) (24.03.2011)
- ज. ओम प्रकाश गर्ग “मधुष” (अग्रवाल भावन राजस्थान (17.09.2011)
- ट. विजय कुमार (विद्याभारती अखिल भारती शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली)
- ठ. विश्व मोहन तिवारी (एयर वाइस मार्शल)
- ड. एम एल झुनझुनवाला (एडवोकेट, सम्बलपुर) (23.09.2009)
- ढ. कर्नल तेजपाल त्यागी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) (02.11.2011)
- ण. देवदत्त जी (श्री अरबिन्दों आश्रम पांडिचेरी) 16.10.2008
- त. लायन इशरत अली कादरी (लायन डिस्ट्रिक्टगर्वनर) 07.11.11
- थ. लायन डॉ प्रकाश सेठ (लायन डिस्ट्रिक्ट चेयरप्रशन)

■ रामगोपाल बसंत

जिन्होंने दौलत-शौहरत छोड़ लिया सेवा का संकल्प

सनातन परंपरा में मनुष्य के लिए चार आश्रम माने गए हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। पेशे से उद्योगपति इंजीनियर रामगोपाल बसंत ने भी जीवन के तमाम रंग, दौलत-शौहरत देख लेने के बाद वानप्रस्थ आश्रम को अपनी जीवनवर्षा बना लिया है। यानी सादा खाओ-खदा (खादी) पहनो।

कभी प्रदेश के जाने-माने उद्योगपतियों में शुभार रहे श्री बंसलका आज ध्येय ही लोगों को जीवन के आदिकालीन सत्य और तथ्य से परिवर्तित करता है। 1947 में जन्मे श्री बंसल ने जीवन के तमम उत्तर-चक्रों से गुजरते हुए 1972 में इंटरप्राइजेस इंजीनियरिंग के नाम से भोपाल में फैक्टरी स्थापित की। इसके बाद उन्होंने भाइयों-भतीजों के साथ चांगू और फैक्टरीया लगाई, जो आज ट्रांसफोर्मर और इलेक्ट्रिक उपकरण बनाने का काम करती है। बंसल कई सालों तक गोविंदपुर इंडस्ट्रीज एसेमिलेशन (जीआई) के सेकेटरी भी रहे।

इस बीच 2002 में आध्यात्मिक गुरु श्री आनन्द मूर्ति का सामाजिक प्राप्त हुआ और उन्हीं की प्रेरणा से अक्षर प्रभात ट्रस्ट की स्थापना की। इसके जरूरे श्री बंसल समाज में सनातन चेतना जागृति का काम कर रहे हैं। हालांकि श्री बंसल के पीतर सेवा का जन्मा बचपन से ही रहा।

स्कूल-कॉलेज में अध्ययन के दौरान जब भी

मौका मिलता, दीन-दुखियों के सेवा में लग जाते।

लोगों को प्रेरक पुस्तकें बाटते उन्हें स्वानामक और आध्यात्मिकता की ओर मोटीवेश करते। श्री बंसल अब हर महीने 20 से 25 हजार की पुस्तकें निःशुल्क लोगों में बाटते हैं। उन्हें जीवन भर पुरुषाथ कर जो यूंजी जमा की है, उसका एक बड़ा हिस्सा लोगों की सेवा पर खर्च करते हैं। वे एक मासिक पत्रिका अक्षर प्रभात का भी प्रकाशन

बंसली
के भीतर सेवा का जज्बा
व्यवन से ही रहा। स्कूल-
कॉलेज में अध्ययन के दौरान
जब भी मौका मिलता, दीन-
दुखियों के सेवा में लग
जाते।

करते हैं। बंसल के जीवन में बड़ा बदलाव तब आया जब 2007 में पत्नी का देहावसान हो गया। उन्हें लगा कि अब सासारिक विद्युत्याओं का कोई अर्थ नहीं है, सो उन्होंने ताड़प वानप्रस्थी रहने का ब्रत ले लिया और पूरे जीवन को साधना

से जोड़ दिया। खुद खदा, स्वदेशी के साथ सादगी से रहते हैं और जहां जाते हैं वहां लोगों को स्वदेशी वस्तुओं के ज्यादा उपयोग का मकल्प दिलाते हैं। बंसल कहते हैं कि उनके जीवन का एकमात्र ध्येय लोगों में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक जागृति लाना है। ताकि हम स्वस्थ, विकसित और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकें।



10, एक्सोफोट कल्याणी, इंद्रगढ़ फ्लॉ, भोपाल
फोन : 0755-2544579, मोबाइल : 09425006894

दिनांक _____

दिनांक 22.5.2013

एक संपूर्ण पत्रिका, अक्षर प्रभात

प्रिय राम बंसलजी,

प्रधान सम्पादक,

सादर नमस्कार,

लगभग विषेष छः गाह से प्रतिमाह अक्षर प्रभात पत्रिका पढ़ रहा हूँ।

सर्वप्रथम इतनी अच्छी शिखाप्रद पत्रिका का सम्पादन कर प्रकाशित करने के लिए बधाई व धन्यवाद द्येकार करे।

इस पत्रिका को पढ़ने के बाद कोई अन्य पत्रिका पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। अक्षर प्रभात अपने आप में एक संपूर्ण पत्रिका है जिसमें वर्तावान में आवश्यक प्रत्येक विषय का समावेश बहुत ही सरल, सुरुचि समझ में आने वाली भाषा में किया जा रहा है। मैंने आपकी पत्रिका गे राष्ट्रीयता द्वारा विषय पर जैसे नगरीय बनोत्यान विकास, बुद्धिजन कल्याण, शिशु कल्याण, गैर संकर्दन, कृषि, जीव विज्ञान, शिशु शिक्षा, मातृशक्ति जागरण, विकल्पसांस्कारिक, प्राकृतिक विकेन्द्रीय जल एवं पर्यावरण, समाजिक व्यवहार, आध्यात्मिक योग्यता, व्यक्ति विकास, सनातन सत्यकृति, व्यक्तित्व समाजोत्पान तथा हिंदी विकास लेख पढ़े इतने विषयों पर किसी भी पत्रिका में लेख प्रकाशित नहीं होते।

पत्रिका में उजा सभी विषयों को समाहित कर आप बास्तव में एक अच्छे सिंपाई की तरह देश सेवा में योगदान दे रहे हैं।

रामी वर्गी व उस के व्यवित्रियों के लिए परिवार के प्रत्येक सदस्यों द्वारा पठनीय अक्षर प्रभात के लिए बधाई साधुवाद।

सुभाष काला—भोपाल

सुभाष कैल काला
अधिकारी कर समाजकार
प्रम. वी. कृष्ण दत्तात्रेयी

अव्याहृत
की दिग्भाव जैन बैठकाला नगर, भोपाल भैंसपाल
मी. भारतवर्षीय दिग्भाव जैन बैठकालीन भारताला, म.उ.

प्राहृष्ट कार्यालय
की दिग्भाव जैन बैठकाला यूप केवलता

प्रदेश कार्यालय
दिग्भाव जैन बैठकालीन

पूर्व अध्यक्ष
देश तथा भारतीयसामाजिक, भोपाल
प्राहृष्ट बैठक महामंडी, भोपाल
देश तथा भारतीयसामाजिक, भोपाल
दिग्भाव जैन बैठकाला, भोपाल
देश तथा भारतीयसामाजिक, भोपाल

समाजकार
नियमाला इन्स्ट्रुक्यूशन और सेवेकेंट भोपाल
दिग्भाव जैन बैठकाला, भोपाल भैंसपाल
दिग्भाव जैन बैठकालीन

समाजकार
विवेकानंद समाज इन्स्ट्रुक्यूशनी
अधिकारी विवेकानंद भोपाल

आजीवन सदस्य
प्राहृष्ट भवन इन्स्ट्रुक्यूशन
गैरी भवन इन्स्ट्रुक्यूशन
देश तथा भारतीयसामाजिक, भोपाल

कार्यालय
श्रीवामनव एण्ड काला
एडवोकेट एवं कर समाजकार
माध्य प्रकाश भवन, मालवीय नगर
फोन : 462003

पूर्वाभ : 0755-2768094, 4013532
काला एण्ड भुजा
एडवोकेट एवं कर समाजकार

21. विवेकी व्यापारसामाजिक, भोपाल
दी वी. जाग, भोपाल : 462003
दृष्टाव : 0755-2554566
फोन : 0755-4224566

E-मेल : subhashkala@yahoo.in



ੴ

BRMP Charitable Trust Bond

 BRMP
Charitable trust

25.05.2017

२१. राम गेहवाल जी कंसल
उमाल समाज-
“अक्षर” उमाल
२२. इन्द्रियुली- रामसे न रो-
गेहवाल ५६७०२।

उत्तरके द्वारा उन्नीशित प्रगति "अस्त्र समाज" मुझे दैनन्दिन कद से छाप हो रही है। उत्तरके द्वारा उत्तरके द्वारा उत्तरके द्वारा

मैं उत्तमका, परिवार में परेसी, जब रही सामग्री
प्राप्ति काल से पहली ही ओर उत्तरसे अपना
इंस्ट्रुमेंट काल से बदला है। उत्तरके द्वारा एवं बड़ी-
ग्रामीणका, सभी हीत में है। मेरा भवनताहै कि
उत्तरके हाथों छढ़ाया जा सकता है। जो पहली
ओर उत्तर के व्यापारों पर मतलब लेने से मनुष्यों
जीवन का सम्बन्धित हो जाएगा तो अपनारे सभी को
सुनी लें सकता है।

परो अद्वा रे तांत्र हाल, यसका ना अद्वा -
रे आपको इन उपको समस्त सद्गुरियों को उन्हें
अचैत्य काम के द्वारा शुभकामनाम् उद्धव हो।
उद्धव राजा रेवा के उद्धव धृष्णु मे सतत
लग रहे अद्वा पाठको ना गतिशील करना रह
गहि. मेरी जामना है।

ଅର୍ଥକାର
(ପରିବାର-ବ୍ୟକ୍ତିଗତ)

HIG-10, Shivaji Nagar, Bhopal - 462 016 Ph : 0755-2576664 M : 9425030149 e-mail : asabu@gmail.com

ੴ

समीक्षात्मक प्रतिक्रिया

विगत लंबे समय से साहित्य के प्रति मेरा व्यक्तिगत रूप से इतना लगाव रहा है कि आज जब में 70 वर्षीय वृद्ध व्यक्ति हो गया हूँ तो लगता है कि मेरे अंदर का लगाव अब भी कम होने का नाम नहीं ले रहा है। ऐसे रहा है। ऐसे में अक्षर-प्रभात पत्रिका मेरे हाथों में संपादक श्रीमान रामगोपाल बंसल जी के माध्यम से पढ़ने को मिली तो मुझे लगा कि अब तक मैंने जितना और मार्गदर्शन को उभारने में अपना विशेष प्रतिपादन करती है। आम तौर पर कुछ लोग पत्रिकाओं को मनोरंजन के तौर पर या यात्रा अवधि की उब को मिआने के लिये पढ़ते हैं। लेकिन इस पत्रिका को इस प्रकार की क्षेणी में नहीं रखा जा सकता है और जितनी बार भी पत्रिका को पढ़ा जाय उतनी बार इसके नये नये आयाम उत्तर से प्रतीत होते हैं।

मुझे याद है मेरे शैशवकाल में गीता प्रेस गोरखपुर से एक महत्वपूर्ण पत्रिका—कल्याण और उसके महाअंकों का प्रकाशन नियमित रूप से होता रहता था जो हिन्दू धर्म की समग्रता को बहुत अधिक उभारती भी खासतोर से सनतानता को लेकर उसमें जो चर्चा विद्वानों के द्वारा की जाती थी तब तो उस सनातन ता का अर्थ मेरी समझ में नहीं आता था मगर जब इस पत्रिका—अक्षर प्रभात को मैने पढ़ा तो सनतन धर्म क्या, केसे क्यों के बारे में विस्तार पूर्वक जानने समझने को मिला ।

द्वारा आज प्रतियोगितापूर्ण समय में जबकि दूरदर्शन, वाट्सअप, यूट्यूब, फेसबुक और भी न जाने क्या आयाम हमारे चारों ओर के वातावरण को प्रभावित करने में लगें हैं ऐसे में यह पत्रिका अक्षर प्रभात अपना एक अलग स्तर बनाये हुये हैं और इसका सारा श्रेय श्री रामगोपाल बंसल तथा उनके संपादकीय मंडल को जाता है। पत्रिका के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है जिसका उल्लेख समय समय पर किया जा सकेगा। अभी तो मेरी यही हार्दिक इच्छा और शुभकामना है कि पत्रिका निरंतर विकास की ओर इग्रेसर हो और समाज उपयोगी कार्यक्रमों में अपनी उल्लेखनीय भूमिका का निभाव करती रहें। पुनः हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

ओमप्रकाश नामदेव

ट्रांसलेटर तथा करसपांडेन्ट,

2 / 156 एस आ जी कापंलेक्स, नोबल स्कूल के पास,

015 कल्पना नगर, रायसेन रोड़, भोपाल म. प्र.

श्री राम गोपाल बंसल जी

22-ए, इन्द्रपुरी

भोपाल

महोदय,

सादर नमस्कार

आप के द्वारा भेजा हुआ अक्षर प्रभात पत्रिका हमें निरंतर प्राप्त हो रहा है। इसके लिए मैं अत्यंत अभारी हूँ।

वर्षों पहले अक्षर प्रभात मासिक पत्रिका के रूप में आप ने एक छोटा सा पौधा लगाया था लेकिन आप के अनवरत प्रयास, लगन तथा परिश्रम के फलस्वरूप आज वह नह्ना पौधा पूर्ण विकसित वृक्ष बन चुका है। आज अक्षर प्रभात रूपी वृक्ष मानवता के कल्याण में सलग्न होकर फल फूल तथा सुगंध सब कुछ दे रहा है। इस पत्रिका द्वारा सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, देशभक्ति तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त हो रहा है। घर में उपलब्ध सब्जी, फल तथा मशालों के द्वारा रोगों के इलाज का मार्गदर्शन भी मिल रहा है, जो आज के खर्चिले इलाज से बचाने का सफल प्रयास है।

अधिकार की बाते तो सब करते हैं। लेकिन हमारा कर्तव्य क्या है इसकी बात कोई नहीं करता। समाज, परिवार मानवता, देश, पर्यावरण इत्यादि के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है। इसका ज्ञान भी हमें इस पत्रिका द्वारा प्राप्त हो रहा है। सरल तथा सुखी जीवन जीने का ज्ञान भी प्राप्त हो रहा है।

आज के उलझन भरे वातावरण में सुखी तथा सफलता पूर्वक परिवार चलाना बहुत मुश्किल कार्य है। लेकिन इस पत्रिका के अध्ययन से हमें सुखी तथा आनंददायक परिवार संचालन का सरल तथा सुगम ज्ञान भी प्राप्त हो रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से योग, ध्यान,

५

व्यायाम तथा योगासनों के द्वारा मानव शरीर को स्वस्थ्य रखने की जानकारी भी प्राप्त हो रही है। अतः मैं सभी लोगों से अनुरोध करता हूँ इस पत्रिका को अवश्य पढ़े क्योंकि इसमें सब तरह के ज्ञान का भण्डार है।

मैं इस पत्रिका के विकास हेतु एक छोटी सी सहयोग राशि रूपये पाँच हजार इस पत्र के साथ प्रदान कर रहा हूँ कृपया स्वीकार कीजिए।

बहुत धन्यवाद।

19

दिनांक 15.04.2018

आप का शुभचिंतक
बी. पी सिंह

मकान नं. 40, लक्ष्मी नगर
भोपाल (म. प्र.)
मो. 8889672969

- ◆ जिसने एक सच्चा गुरु पा लिया, उसने मानों सारा संसार पा लिया। माता-पिता, बच्चे और दोस्त तो सभी के होते हैं लेकिन गुरु का भाग्य सबको नहीं मिलता।
- ◆ दुनिया में सबसे तेज रफ्तार दुआओं की होती है। जो जुबान तक पहुंचने से पहले ही ईश्वर तक पहुंच जाती है।
- ◆ भक्त सदैव अपने प्रियत्तम प्रभु की गोद में रहते हैं—मृत्यु के पहले भी—मृत्यु के बाद भी।
- ◆ जीवन में कभी—कभी आपको गिराने वाले को यह नहीं पता होता कि आपकी वजह से ही तो खड़ा हुआ है।
- ◆ जिसकी सफलता नहीं रोकी जा सकती उसकी बदनामी शुरू कर दी जाती है।

राम गोपाल जीवन यात्रा

८

SHYAM KUMARI AGRAWAL
SRI AUROBINDO ASHRAM
PONDICHERRY - 605 002
INDIA

18-6-2009

मिथ्या नहि रान बंसल,
आपके जोग के बाद मैंने अनेक
बार आपसे दूरभास पट अपकी कोरो
को असलाल प्रयत्न किया। आपका
पहनी के इवाष्य, आपके आवकाटके
सुनादगे के विषय ने चिन्ता करो
ईडी। कृपया बुश्ल-सेन ऐ उवगत लेयो।
आपके पर्वको पट टिकट फुरा नहो
दोना और हर बार १० रुपये लेलेते
हों। ऐ आपको परिवार के आजी डंगा
अन्य लभीताओं को पढ़ने को दे
देंगो। 'इसे हम' भिनतो रहो दोगा।।
कृपया उसके विवरण ने ज्ञेतव्य
लिखा करे तो पत्र छाप देंगो।।
इस्तर आज को बुलिएको जबउन
बताए। सुन-गू— दोषो



हरियाणा प्रदेश सर्वोदय मंडल

स्वाध्याय आश्रम, पट्टी कल्याणा

ज़िला- पानीपत- 132102 (हरियाणा)

4x141-65a/11-12

R-714 26-11-41

ଶ୍ରୀମତୀ ପାତ୍ନୀ କଣ୍ଠାରୀ ପାତ୍ନୀ

ପ୍ରାଚୀ ମାର୍କେଟ୍

આપણી પરિવાર "આસ્પદપત્રા" વરાલા મિલ્લો રહુણે હું એપાણા
પાણાનિયત કાલાચીફીની માનવ વી જીવશક્તા છોડું માંગ અની
મુખ્યમં મુખ્ય પર વાત મેળાતી બેદનાણીઓના મન કષણાંથી
ફેરફાર તો વાત કેળા ના એ એ કૃતિના પુરીતીની કાઢી ન હું હું હું
શી રાખો મેં મનભેદબાળ ન હું હું પાંચ મુખ કાંચાંના હું
સંતોષ મન કરુણાં હો શકતાં હો શકતાં હો શકતાં હો શકતાં

प्राचीन शिल्पों की अवधि से अनेक वर्षों पहले ही यहाँ विद्युत ऊर्जा का
संचयन की जगह है। ये उत्तर संघर्षों के दृष्टि में इसके अद्भुत
द्वारा समाज (समाजिक) विकास के नियमों के बाहर विद्युतिकार्य का विवरण है।
यात्रियों की अवधि की विद्युत ऊर्जाकारी की है। यह विद्युत के विकास की
विधाया के अनुसार विद्युत ऊर्जाकारी की है। यह विद्युत के विकास की
विधाया के अनुसार विद्युत ऊर्जाकारी की है। यह विद्युत के विकास की
विधाया के अनुसार विद्युत ऊर्जाकारी की है। यह विद्युत के विकास की

81015
7-12-~~1948~~

लायन्स क्लब्स इन्टरनेशनल **LIONS CLUBS INTERNATIONAL**

DISTRICT 323 Q-2, 2011-2012

Mukesh Mathur

Lion Mukesh Mathur

Dist. Governor

५



दिनांक: 17.10.11

लायन रामगोपालजी,
डि.चेयरपर्सन “सुविचार”

प्रिय लायन रामगोपालजी,

सर्वप्रथम आपको बहुत बधाई, आपके द्वारा द्वितीय केबिनेट के अवसर पर शानदार परिपत्र जारी किया गया। आपके दिशा निर्देशन में सभी कलबस सूचारू रूप से गतिविधियों को संपन्न कर रहे हैं जैसा कि मेरी इच्छा थी की हरा वर्ष हम अधिक से अधिक सेवा गतिविधियाँ कलबों के माध्यम से संपन्न करवायें। निश्चित ही आपके मार्गदर्शन से कलबस लाभान्वित होंगे और आने वाले समय में भी सेवा गतिविधियों को प्राथमिकता देंगे। हम हमारे Slogan "WE SERVE" में कामयाब होंगे। इन्हीं आकांक्षाओं के साथ आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

For "TEAM WORK-DREAM WORK"

धन्यवाद,

~~Cathur~~
लायन मुकेश माथुर
डिस्ट्रिक्ट गवर्नर
डि. ३२३जी-२

Guru Arcade, First Floor 153, Zone - 1, Behind Axis Bank, M. P. Nagar, Bhopal-462 013
Phone : 09301787559, 0755 - 4260042 (O) 4289772 (R) Mobile : 9826093882
E-mail : pranamasociates@yahoo.com, lionmukeshmathur@yahoo.co.in
Website : www.lions323e.com

आदरशीय बंसल जी,

३।

२४ मार्च २०१।

संष्टुति नमस्कार।
आपकी अक्षर प्रभात प्रतियां पढ़ कर संजो का रखती हूँ। हृत्य को
प्रसन्नता देती है, और आपके हास भगिरथी प्रगाढ़ को झाड़ुलाद। देख देख
की ज्वाला दूर ही प्रवाहित करें तब्बा मानव कल्पणा ने भावना कहे, उन
अनुकूलता कम न हो।
लेट व मंदिर कृदेव ग्राही देह है। इस वर्ष का अंक
भूजा है। श्रीकालिष्ठ।

संसार अश्ववाल
जीवनशालाद
१०७ नीरिस्तण्ड ३
इंद्रप्रसाद, मणिपुर - ७८६५
९८९९५५२२५२

ब

जन्म श्री राम
१७/३/११

आदरशीय श्री वेत्तल आर.
एस. अक्षर जी राम!

उम्मीद एवं विवरण के अनुसार आपका जन्म श्री राम के अनुभवित तो होना है, जीवन के कल्पनाओं के दूर नहीं रखता है। उस दुर्लभ आत्मानन्दानुभवि हेतु
पत्रिका द्वारा आपका आभासी एवं उत्त्यापी रखा जाएगा।

उस पत्र के सूचना में आपनी निम्न पांच पुस्तकों
सम्मेलित कर रख दी गई है। विद्वान् ब्रह्मचर्ण की भावना की नहीं
अपितु आपसे यह भाग्यमार्गदर्शन शाष्ट्र काले की लालसा से।
आपका हृत्य आप इपना मार्गदर्शन/सुझाव अंजने का कानुनक
कार्य जिससे मेरे भावी लेखन को कुछ दिशा दिलव सके।
पुस्तक -

अनुवंशकात्मक आनुग्रह, श्री विष्णु उत्तरेन अवतारी,
अंशावतर आदिकाण्ड, उत्तर अस्त्रकौरित, श्रीयुक्त शरवम्
धन्ववाह। कृपायज्ञ की उत्तीर्णा।

ले दाकां श्री,

अतिथि में
आदरशीय श्री राम गोपाल जी बंसल,
कायालय अक्षर जी,
२२ए, डॉक्युमेंटरी,
गोपाल - ५६२०२।

अप्रैल २०१।

अश्ववाल भवन नाम
गोपाल - ३४४००१ (राज.)
फोन : ०२९६२-२३०१५६

५

M. L. Jhunjhunwala & Co.
Lawyers & Advisers in Tax Cases
M. L. Jhunjhunwala, M.A. (Com), LL.B.
H. V. Jhunjhunwala, M. Com, LL.B.

Phone: 2411221, 2411247 (Office)
(063-2411960 (Fax))
2411443 (Residence)
Nandpara, Sambalpur - 751001 (ORISSA)

To,

Sri Ram Bansal Ji
C/o Akshar Prabhat,
22 - A, Indrapuri, Bhopal
Email Address - aksharprabhat@hotmail.com

"Jai Sri Ram"

Dear Sir,

I have received the second copy of Akshar Prabhat. I have gone through the same and I am very much impressed with the material and contents thereof.

In the said monthly journal you have requested me to become a subscriber thereof.

Please let me know the yearly subscription amount required to be sent to you by me. If there is any life membership fee which may please be also intimated.

With Regards,

Yours sincerely,



M. L. Jhunjhunwala
Advocate, Sambalpur

23-09-2009



६

युग एवं योग पुस्तक स्वामी रामदेव जी द्वारा गठित "भारत स्वाधिकान" को समर्पित

राष्ट्रीय सैनिक संस्था

(देशभक्त नागरिकों और पूर्व सैनिकों का संगठन)

REGN No. 61 Letter No. 1-42274 (M) Dt. 26th Apr. 2002
Regn. Under FCRA No. 136810060 Dt. 13th Jan. 2006

Exemption under sec 80(G) of the IT vide 58(35) Exemption/Ghaziabad/Dt. 17 Oct. 2003 Renewed on 27.07.09

प्रधान सचिव :	प्रधान सचिव :	प्रधान सचिव :
कलेन तेजेन चाल त्यागी, बीर खड़ा B.Sc., B.E. (Civil), M.Tech. (Structure) 133- के. नालन लाल पौ. चालखाल जन. पा. 0120-2117021, 911922881	दिवेन भारद्वाज पहों चंदो मंदी. चंदोला, हारियाल मो. 90 098100472187	आदेन त्यागी प-44, फिरोज अपार्टमेंट, जला. मो. 620, IP Extm., DL-II मो. 90 09810047441
संस्थाकर्मकाल :	संस्थाकर्मकाल :	संस्थाकर्मकाल :
स्वामी प्रजानन्द जी महाराज 9868112211	दीपक भारद्वाज दीपल दुष्म दुष्म लंगल पद्मन लंगल-2, वै विस्ती मो. 90 09811348077	
श्री रमेश अग्रवाल 9312214321		
श्री हरीलाल आई.ए.एस. 011-22484341		
ले. बनाल जी. के. एन. विल्या 0172-3290074		
ले. बनाल ए. ए. वालिया 0120-2455936		
ले. बनाल अनुप एम. आम्बाला 9810490054		
ले. बनाल के. एन. लेड 09811224400		
ले. बनाल की. एन. ताही 09818898471		
ले. बनाल जे. एन. गार्ग 0120-2439057		
मेहरा बनाल ए. जे. जी. तेजी 09810180189		
मेहरा जसराज आर. के. कलाल 09414076412		
उपायकाल :	उपायकाल :	उपायकाल :
दिवेन्द्रिया ए. के. सोनी 0124-2468990	तेजेन पाल त्यागी (Col Tejendra Pal Tyagi) National President Rashtriya Sainik Sanstha	महेशा की तरह अत्यन्त प्रभावी सुविचारों से महकता यह अंक आपकी निरतर जारी मैहनत एवं समाज सुधार के सतत प्रयासों का सुपरिणाम है। इस बेहद कीमती तोहफे ने मेरे सम्मानिय संकलन को ऊर लीमती बना दिया है। मैं आपके परिपत्र पूर्वी से ही सम्माल कर रखता आया हूँ। इस जखीरे में अब और इजाफा ही गया है धन्यवाद का शब्द काफी औपचारिक और छोटा प्रतीत होता है अतः केवल धन्यवाद कहने से काम नहीं चलेगा। यात्राविकला यह है कि मैं वाक़ई मैं अभिभूत हूँ और आपके समरत प्रयासों को नमन करता हूँ।
संचालक :	संचालक :	संचालक :
सूर्योदास बद्रीनाथ सिंह नैनिया 01232-250341	पुन. मुझे सदैव याद रखने के लिये बहुत धन्यवाद। अनन्त शुभकामनाओं के साथ	
सूर्योदास पी. पी. सिंह 9330893455	आपका अपना	
संचालक :	संचालक :	प्रति,
जोगी राजेन्द्र चालसी 9210728801	जोगी राजेन्द्र चालसी एम. के. राजपूत 9891438987	लायन राम बनाल
महेन योहन त्यागी 9997689822	महेन योहन त्यागी अमरेन्द्र योहन त्यागी 9818637834	अक्षर प्रभात परिवार
		22- ए. इन्द्र पुरी
		भोपाल - 462021

In the honour of,

Shri Ram Bansal
22 A, Indrapuri, Bhopal

Jai Sanatan- Jai Parivar

Dear Shri Lion Ram Bansal Ji,
Jai Hind.

Your views on spirituality are commendable & praiseworthy
We value you, we admire you and we are proud of you.

With regards & Affection

०२ नवंबर २०१

(Col Tejendra Pal Tyagi)



८

LIONS CLUBS INTERNATIONAL
DISTRICT 323-G-2

District Governor : Lion I. A. Quadri

"Ashila", B, Indu Colony,
NAGDA - 456 115 (MP)
Tel: 91-716-24242, 9191-44572
Cell: 9998273-20266
Fax: 91-716-242830
e-mail : akashtraders2003@gmail.com

7.11.11

Cell: 9425195573

प्रिय लायन राम बनाल जी,

द्वितीय कंबिनेट मीटिंग के अवसर पर प्रकाशित आपका परिपत्र पाकर अत्यंत प्रसन्नता हुई।
धन्यवाद।

हमेशा की तरह अत्यंत प्रभावी सुविचारों से महकता यह अंक आपकी निरतर जारी मैहनत एवं
समाज सुधार के सतत प्रयासों का सुपरिणाम है। इस बेहद कीमती तोहफे ने मेरे सम्मानिय
संकलन को ऊर लीमती बना दिया है। मैं आपके परिपत्र पूर्वी से ही सम्माल कर रखता आया हूँ।
इस जखीरे में अब और इजाफा ही गया है धन्यवाद का शब्द काफी औपचारिक और छोटा प्रतीत
होता है अतः केवल धन्यवाद कहने से काम नहीं चलेगा। यात्राविकला यह है कि मैं वाक़ई मैं
अभिभूत हूँ और आपके समरत प्रयासों को नमन करता हूँ।

पुन. मुझे सदैव याद रखने के लिये बहुत धन्यवाद। अनन्त शुभकामनाओं के साथ

आपका अपना

जीर्ण वाला

इश्वर अली कादरी

प्रति,
लायन राम बनाल
अक्षर प्रभात परिवार
22- ए. इन्द्र पुरी
भोपाल - 462021

PERFECTION IMAGE
2006 - 2007

We Serve



Lions Clubs International

District 323 G-2, Year 2011-12



Lion Dr. Prakash Seth
Dist. Chairperson (Environment)

Lion Mukesh Mathur
District Governor

Ref.

Date: 1.8.1.0.2.0.1.1

सम्माननीय लायन राजा लंका तथा ॥

“दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं”

द्वितीय केबिनेट बैठक में आपके विषय सुनाया गया : से सम्बंधित सर्कुलर प्राप्त हुआ। आपने "हम सेवारत" को और मजबूत करने के लिए जो विचार अंकित किये हैं मैं पढ़कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं आपको सेत्यूट करता हूँ। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है सेवा पथ पर आपका रखेह एवं मार्गदर्शन जरुर प्राप्त होगा।

“Success is the utilization of the ability- that you have”

“आओ मिलकर सपने पूरे करें”

आपका लायन साथी,

1886-1

लायन डॉ. प्रकाश सेठ



HC- Lions Club Bhopal Lakecity
(First century club, ISO 9001:2008 certified club)

Address: MX33, E7 Extention, Arera Colony Bhopal- 462016
Contact: 09425010266, (0755) 2461312 Email: drpcseth@gmail.com

२२/१२/६० विद्या लिपान

ପ୍ରକାଶକ | ୮ ଶିଳ୍ପା ଲିମାନ୍‌
ଇମାରି

त्रिष्णु ।

गरीब बन्ना के लिये „सुन्दर सोला जम !

श्री मान

मेरे आपें भावुकीय करता हुआ मैं गतिवाद नव्यवादी रखने
भवतावदी के लिये के लिये पढ़ा का इतनास मिल
जाता जीविय इस बदली हुई आखदी और इन लिए
की भी कामी तदाद के लिए हो चुकी है और उनके लिए
मह वन्देश पर भी सकते और इसे जाता पिला
इसके लिये कैट्टीन के लिये ऐसे बुरा नदी समैत नह
चुक भाषण व अपेक्षा बन्धों मा पर मुश्किल है। पालता
है और नह पढ़ा मैंसे सकते हैं। मैं सरकार के
भावुकीय करता है कि इन लियों के लिये इसके रुकुल
रवोबा बोय जिसीमें मैं युपत्त विधान परीक्षा है।
और लियों के लिये रहने रखने का अधिक है।
और बन्धों किसी नाति के हो सकते रखके साथ
दी गयी चीज़ों के इस रुकुल में बन्धा जल तक
पटता है जब तक मो नह अपेक्षा पर रखना बन्धों
की इस रुकुल में सब उकाई गई विधाया का उत्तराधीन
नाम बन्धों जिससे ये बन्धों भप्री रखने भावुकार विधाया
वे रोक और यह कर्ते भी बन्धों बोल भविष्य तुल बैग्ने
में जाए गए यह देखता है कि यह जिस भीष्य जारी
की जात बन्धों के लिये पर रेख बन्धों बनी है। और इस
पर कोई युलाय गरकात नहीं हिकाता है। योद इसका
चिन्ह जलता ही रहा तो हमारी देख कोई उत्तर नहीं कर सकता
यह रुकुल भावत का नहीं पर भी रखोला गया अपेक्षा
नाम बन्धों भी। और सरकार इस विधायी पर रुकुल
नामका के तो ये सरकार का गड़ भागी हुआ गया।

भौतिक जीवान की आदत इन्द्रियों परिवार के
को अपेक्षित है। और ऐसे व्यक्ति के दृष्टि अपेक्षित व्यक्ति का
उत्तर है जो कही जाना चाहिए। इन्द्रियों से ब्रह्म के लिए उत्तर
मुख्य है। इन व्यक्तियों को ब्रह्म का उत्तर भी कहा जा सकता है।

मिशन के बट्टों हृत भागी में सार्वी कोतोंगों । और उसके दोरों में भीरवारियों की शान्ति ३१८८ गोदी और ४२८५ लाल बाट अपेक्षित तो रम्भ भी भीरवी की मिशन जो मिशन चिह्नित यक्षि देखा इसके दोरों से भीरवी गोंगों की जड़ है । यह एक चिह्न और इस पहले के जै काटिए तो वह आज तकी वह महत्व इसी उक्त बच्चे शिक्षा पाने लोट वही बच्चे करके स्थापित करने वाले जो गाम शेशम करने में इसी बच्चों के हो कान्हों आशा रही । यह सारकार इसे लिये रम्भ आपा झुल खोड़ दे गिरफ्तर के आदें से भवदी आवार तेजे गोदी डोम्ह इस बच्चे पर करकोल कर सके । और यह कोई भी व्यक्ति चिना पाये के बार यही शैक्षण्य दीक्षित और उस कर और वह भास्तव की कुछ तरफे चिराता है । और इन करों के लिये इसके सुखाधा दीमी जाते । वैसे सरकार ने कान्हों उक्त दीक्षित हो दीये अपने इनके लिये कोई सुखाधा नहीं है । इन बच्चों के लिये रहने-रहने-पठाने के लिये तुम्हारा ! इसका पदार्थ दीक्षित है ।

मैं आपा रातों हूँ कि मेरे इस पक्षज्ञपदम्
आप आवार कुछ रातों रहोउ गिरातोगे यही मुझे आशा
है और आप मुझ फौरन सुनित करने की कौशिश करना अन्यथा
मुझे कुछ अस्थ रातों रहोउगा पेंगा । आप इस कमी
नातवार की कदम उठाने वही मुझे आंदोह ।

आपका द्वितीय
राज गोपाल बंसल
८० कोर नार श्री.बंसल
के ६५२-४८४-सी
पिलानी
मर.ई.इ.
गोपाल-

उप मुख्य मंत्री सचिवालय

मध्यप्रदेश

क्रमांक ३९ / गोपाल उम्मंस. ८८ गोपाल, दिनांक ४ जून १९६६।

विषय — ~~गोपाल जीवन के लिये मुख्यमंत्री द्वारा प्रस्तुति दीया~~

महोदय,

आपका पत्र/तार दिनांक २२-६-१९६६, उप मुख्य मंत्री महोदय

मध्यप्रदेश को प्राप्त हुआ । उसे शिक्षा संविधान प्रभावी विधान को

निराकरण हेतु । जात्र हेतु प्रतिवेदन हेतु भेजा गया है । आप कृपया उनसे सम्पर्क करें।

१९६६ निज सचिव,
उप मुख्य मंत्री सचिवालय,
मध्यप्रदेश.

हौसला

हौसला मंजिल बनेगा, देखा लेना एक दिन,
हम भी लहरायेंगे पचरम्, देखा लेना एक दिन ।

जो परिन्दे दूर तक परवाज पर है आजकल,
लौट आयेंगे घरों को देखा लेना एक दिन ।

ये सफर जो शामजन हैं, कामयाना की तरफ,
कारवाँ की शकल लेगा, देखा लेना एक दिन ।

जो नहीं लेते सबक, गुजरे हुये तुफान से,
डूब जायेंगे भाँवर में, देखा लेना एक दिन ।

एक सपना देखता हूँ, जागती आँखों से मैं,
ने हकीकत में ढलेगा, देखा लेना एक दिन ।

मेरे अनुभव

(रामगोपाल पापा पर)

पूजा धिमान— सहयोगी अक्षर प्रभात

आज जीवन का कुछ समय पापाश्री (रामगोपाल बंसल) के साथ बिताया उसका संस्मरण लिखने का प्रयास कर रही हूँ।

हम भोपाल में शादी के एचात हमारे पति संजय के साथ आये। यहाँ पर कुछ दिनों एचात पापाजी (रामगोपाल बंसल) से मुलकात हुयी कहते हैं कि अगर हमें कुछ अच्छा मिलना होता है तो वह कहीं न कही, किसी न किसी रूप से मिल ही जाता है। ऐसा ही कुछ हमारे साथी भी हुआ हम नौरी की तलाश में थे और किसा के द्वारा पापाजी से (2010) में मुलकात हो गयी उनसे बातचीत के बाद हमने उनके अक्षर प्रभात आफिस अक्षर प्रभात में आना शुरू किया। हमें लगा कि सबकि तरह हम भी एक Worker हैं लेकिन यहाँ आने के बाद उनसे मिलने के बाद हमें बताया गया कि हम Worker नहीं बल्कि उनके सहयोगी गण हैं। उन्हें अपने काम प्रति इतना उत्साहित इतना महनती देखा हमने कभी भी उनके चेहरे पर तनाव, शिकन, नहीं देखी ओर न ही किसी प्रति उनके गलत विचार देखे हमेशा सब को अपना मानकर और सबकी मदद करते ही देखा।

उन्होने मुझे हमेशा बेटी की तरह प्यार दिया कीरी किसी भी तरह की कमी नहीं होने दी और आज भी वे मुझे संजय को और बच्चों को बहुत प्यार करते हैं बच्चों के लिए तरह तरह की चीजे लाते रहते हैं। हम सबके प्रति उनका प्यार उनका स्नेह बेमिसाल है। उनके साथ रहकर हमें अपनों से दूर ओर अलग होने का एहसास ही नहीं होता उनके आर्शीवाद से हमने आज कामयाबी पायी है। हर चीज उन्होंके आर्शीवाद से मिली है।

हमारे अच्छे—बुरे हर वक्त में हमने श्री पापाजी को अपने साथ खड़े पाया है। इसीलिये हमने भोपाल ओर पापा जी को पूरी तरह

अपना लिया है।

पापा जी के विचारों ने हम सब को बहुत प्रभावित किया हैं वे हर छोटी से छोटी बाते हम बताते हैं, वो कहते हैं कि जो हमसे रह गया हमसे छूट गया वो हम नहीं चाहते कि आप लोगों से भी छूट चाहे वों बच्चों के बारे में हो या फिर काम को लेकर ओर या फिर निजी जिन्दगी को लेकर वों हमेशा कुछ नया सीखने और सिखाने के लिये प्रेरित करते हैं।

और हमेशा खुद से ज्यादास दूसरों के बारे में सोचते हैं। ओर सबको मदद करने को तत्पर रहते हैं। उनके जैसे लोग मिलना बहुत सौभग्य की बात है।

“धरती सा धीरज दिया और आसमान सी ऊँचाई हैं, जिन्दगी को तराश के खुदा ने यह तस्वीर बनाई है। हर दुख बच्चों को वो खुद पे सह लेते हैं,

इस खुदा की जीवित प्रतिमा को हम “पिता” कहते हैं।

पिता

सृष्टि का आधार पिता
जीवन का उधार पिता
पिता बिना नहीं कोई भी
है सबका उपकार पिता

बच्चों की है आसपिता
घर का है उल्लास पिता
पिता सबंल है जीवन का
कुछ पाने का विश्वास पिता

घर की दिवार पिता
मुश्किल में तलवार पिता
देख के शान जो मन में आये
है वो सबका अभिमान पिता

खुशियों का रखता ध्यान पिता
 खुद रहता को मन को मार पिता
 जिनके आगोश में शीतलता है।
 वे बरगद का हैं। छाँव पिता

कुछ भूमि में सारथी पिता
 मरु भूमि में महारथी पिता
 सपने पूरे जिससे हो जाये
 वो हमारे हकीकत है पिता।

कई बार देखा और पाया कि कोई भी उनके सामने ठण्ड से ठिठुरते हुये खढ़ा हो जाये कि उस कुछ कपड़े—कम्बल चाहिये तो तुरंत अपने शरीर से कम्बल उतारकर दे देते और कोई भी उनसे कुछ मदद की कहते वह तुरंत मदद करते हैं भले उनसे कुछ भी कहा हो फिर भी उसकी मदद करने की कोशिश करते रहते हैं।

हम बस उनके स्वभाव से परिचित हैं। अपने स्नेह ममता और अपने अपनापन भरे व्यवहार के कारण पापा श्री अलग ही अंदाज में दिखते वे अपने निन्दकों, स्वार्थीजनों का भी सम्मान—समभाव से सहायता करते रहते हैं।

मैं उनके इस स्वभाव से दुःखी होकर कहती, पापाजी आपकों क्या पड़ी है जिसने आपकों अपमान भरे शब्द कहे, आपाकों आहट किया फिर भी आप उसी से पुनः बात करते हो उनकी सहायता करते हो? मेरी बात सुनकर वे कुछ गम्भीर हो कर चुप हो जाते।

एक दिन पापाजी स्वभाव का जबाबा ऐ पुस्तक में मिला दुर्जन सबों के लिये दुर्जन नहीं भी हो सकता है। पर साधु होता है।

21

पूजा धिमान

राजय कुमार

डी-405, सागर लैण्डमार्क
 अयोध्या बाईपास, भोपाल